Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

18th April 2018

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान समारोह सफलतापूर्वक आयोजित

जलियांवाला बाग के शहीदों की स्मृति में स्वामी इंद्रवेश विद्यापीठ, आश्रम,टिटौली में भारत के 99 शिक्षकों को स्वामी आर्यवेश जी, प्रो.विट्ठलराव आर्य जी,मनीष ग्रोवर,मंत्री हरियाणा,स्वामी रामवेश, विशाल मलिक ने शिक्षक गौरव सम्मान से सम्मानित किया

शिक्षा के साथ संस्करों पर जोर दें शिक्षक- प्रो.विट्ठलराव आर्य

आर्य समाज मदनूर का ८१वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक ३१ मार्च तथा १ अप्रैल २०१८ को आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के अंतर्गत प्रान्त की बहुत ही पुरानी आर्य समाज मदनूर का ८१वाँ वार्षिकोत्सव बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। इस २ दिन के कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंहजी ने की जिसमें स्थानिक तथा आस-पास के गाँवों के बड़ी संख्या में लोगों ने बहुतही उत्साह से भाग लिया। इस कार्यक्रम में आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान उपदेशक पं. धर्मपाल शास्त्री जी मेरठ, उ.प., तेलंगाना प्रांत के विद्वान पं. हरिकिशनजी वेदालंकार, पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी, पं. विश्वश्रवाजी, पं. प्रद्यूम्नजी एवं पंडिता श्रीमती धर्मावतीजी ने भाग लिया। २ दिन के इस कार्यक्रम मे उपस्थित विद्वानों ने अपने ओजस्वी भाषणों से सभी लोगों को मंत्र मुग्ध किया। उसी प्रकार पंडिता श्रीमती धर्मावतीजी भजनोपदेशक ने अपने मधुर कंठ से भजनों द्वारा जन समूह को आकर्षित किया जिसका सभी उपस्थित लोगों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की। इस पूरे कार्यक्रम को आर्य समाज मदनूर के प्रधान रमेश तम्मेवार, मंत्री सोपानराव दंतुलवार, कोषाध्यक्ष हणमान्लू आरमूरवार एवं सभी कार्यकर्ताओं ने बड़े ही उत्साह तथा गर्मजोशी के साथ इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

भगतसिंह (१६३१) मैं नास्तिक क्यों हूँ?

—भगत सिंह

स्वतन्त्रता सेनानी बाबा रणधीर सिंह 1930–31के बीच लाहौर के सेन्ट्रल जेल में कैद थे। वे एक धार्मिक व्यक्ति थे जिन्हें यह जान कर बहुत कष्ट हुआ कि भगतसिंह का ईश्वर पर विश्वास नहीं है। वे किसी तरह भगत सिंह की कालकोठरी में पहुँचने में सफल हुए और उन्हें ईश्वर के अस्तित्व पर यकीन दिलाने की कोशिश की। असफल होने पर बाबा ने नाराज होकर कहा, "प्रसिद्धि से तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है और तुम अहंकारी बन गए हो जो कि एक काले पर्दे के तरह तुम्हारे और ईश्वर के बीच खड़ी है। इस टिप्पणी के जवाब में ही भगतसिंह ने यह लेख लिखा।

यह लेख भगत सिंह ने जेल में रहते हुए लिखा था और यह 27 सितम्बर 1931 को लाहौर के अखबार "द पीपल" में प्रकाशित हुआ। इस लेख में भगतसिंह ने ईश्वर कि उपस्थिति पर अनेक तर्कपूर्ण सवाल खड़े किये हैं और इस संसार के निर्माण, मनुष्य के जन्म, मनुष्य के मन में ईश्वर की कल्पना के साथ साथ संसार में मनुष्य की दीनता, उसके शोषण, दुनिया में व्याप्त अराजकता और और वर्गभेद की स्थितियों का भी विश्लेषण किया है। यह भगत सिंह के लेखन के सबसे चर्चित हिस्सों में रहा है।

एक नया प्रश्न उठ खड़ा हुआ है। क्या मैं किसी अहंकार के कारण सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी तथा सर्वज्ञानी ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता हूँ? मेरे कुछ दोस्त दृ शायद ऐसा कहकर मैं उन पर बहुत अधिकार नहीं जमा रहा हूँ दृ मेरे साथ अपने थोड़े से सम्पर्क में इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये उत्सुक हैं कि मैं ईश्वर के अस्तित्व को नकार कर कुछ जरूरत से ज्यादा आगे जा रहा हूँ और मेरे घमण्ड ने कुछ हद तक मुझे इस अविश्वास के लिये उकसाया है। मैं ऐसी कोई शेखी नहीं बघारता कि मैं मानवीय कमजोरियों से बहुत ऊपर हूँ। मैं एक मनुष्य हूँ, और इससे अधिक कुछ नहीं। कोई भी इससे अधिक होने का दावा नहीं कर सकता। यह कमजोरी मेरे अन्दर भी है। अहंकार भी मेरे स्वभाव का अंग है। अपने कामरेडो के बीच मुझे निरंकुश कहा जाता था। यहाँ तक कि मेरे दोस्त श्री बटुकेश्वर कुमार दत्त, भी मुझे कभी–कभी ऐसा कहते थे। कई मौकों पर स्वेच्छाचारी कह मेरी निन्दा भी की गयी। कुछ दोस्तों को शिकायत है, और गम्भीर रूप से है कि मैं अनचाहे ही अपने विचार, उन पर थोपता हूँ और अपने प्रस्तावों को मनवा लेता हूँ। यह बात कुछ हद तक सही है। इससे मैं इनकार नहीं करता। इसे अहंकार कहा जा सकता है। जहाँ तक अन्य प्रचलित मतों के मुकाबले हमारे अपने मत का सवाल है। मुझे निश्चय ही अपने मत पर गर्व है। लेकिन यह व्यक्तिगत नहीं है। ऐसा हो सकता है कि यह केवल अपने विश्वास के प्रति न्यायोचित गर्व हो और इसको घमण्ड नहीं कहा जा सकता। घमण्ड तो स्वयं के प्रति अनुचित गर्व की अधि ाकता है। क्या यह अनुचित गर्व है, जो मुझे नास्तिकता की ओर ले गया? अथवा इस विषय का खूब सावधानी से अध्ययन करने और उस पर खूब विचार करने के बाद मैंने ईश्वर पर अविश्वास किया ?

मैं यह समझने में पूरी तरह से असफल रहा हूँ कि अनुचित गर्व या वृथाभिमान किस तरह किसी व्यक्ति के ईश्वर में विश्वास करने के रास्ते में रोड़ा बन सकता है ? किसी वास्तव में महान व्यक्ति की महानता को मैं मान्यता न दूँ दृ यह तभी हो सकता है, जब मुझे भी थोड़ा ऐसा यश प्राप्त हो गया हो जिसके या तो मैं योग्य नहीं हूँ या मेरे अन्दर वे गुण नहीं हैं, जो इसके लिये आवश्यक हैं। यहाँ तक तो समझ में आता है। लेकिन यह कैसे हो सकता है कि एक व्यक्ति, जो ईश्वर में विश्वास रखता हो, सहसा अपने व्यक्तिगत अहंकार के कारण उसमें विश्वास करना बन्द कर दे? दो ही रास्ते सम्भव हैं। या तो मनुष्य अपने को ईश्वर का प्रतिद्वन्द्वी समझने लगे या वह स्वयं को ही ईश्वर मानना शुरू कर दे। इन दोनो ही अवस्थाओं में वह सच्चा नास्तिक नहीं बन सकता। पहली अवस्था में तो वह अपने प्रतिद्वन्द्वी के अस्तित्व को नकारता ही नहीं है। दूसरी अवस्था में भी वह एक ऐसी चेतना के अस्तित्व को मानता है, जो पर्दे के पीछे से प्रकृति की सभी गतिविधियों का संचालन करती है। मैं तो उस सर्वशक्तिमान परम आत्मा के अस्तित्व से ही इनकार करता हूँ। यह अहंकार नहीं है, जिसने मुझे नास्तिकता के सिद्धान्त को ग्रहण करने के लिये प्रेरित किया। मैं न तो एक प्रतिद्वन्द्वी हूँ, न ही एक अवतार और न ही स्वयं परमात्मा। इस अभियोग को अस्वीकार करने के लिये आइए तथ्यों पर गौर करें। मेरे इन दोस्तों के अनुसार, दिल्ली बम केस और लाहौर षडयन्त्र केस के दौरान मुझे जो अनावश्यक यश मिला, शायद उस कारण मैं वृथाभिमानी हो गया हूँ।

मेरा नास्तिकतावाद कोई अभी हाल की उत्पत्ति नहीं है। मैंने तो ईश्वर पर विश्वास करना तब छोड़ दिया था, जब मैं एक अप्रसिद्ध नौजवान था।

कम से कम एक कालेज का विद्यार्थी तो ऐसे किसी अनुचित अहंकार को नहीं पाल–पोस सकता, जो उसे नास्तिकता की ओर ले जाये। यद्यपि मैं कुछ अध्यापकों का चहेता था तथा कुछ अन्य को मैं अच्छा नहीं लगता था। पर मैं कभी भी बहुत मेहनती अथवा पढ़ाकू विद्यार्थी नहीं रहा। अहंकार जैसी भावना में फँसने का कोई मौका ही न मिल सका। मैं तो एक बहुत लज्जालु स्वभाव का लड़का था, जिसकी भविष्य के बारे में कुछ निराशावादी प्रकृति थी। मेरे बाबा, जिनके प्रभाव में मैं बड़ा हुआ, एक रूढ़िवादी आर्य समाजी हैं। एक आर्य समाजी और कुछ भी हो, नास्तिक नहीं होता। अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद मैंने डी0 ए0 वी0 स्कूल, लाहौर में प्रवेश लिया और पूरे एक साल उसके छात्रावास में रहा। वहाँ सुबह और शाम की प्रार्थना के अतिरिक्त में घण्टों गायत्री मंत्र जपा करता था। उन दिनों मैं पूरा भक्त था। बाद में मैंने अपने पिता के साथ रहना शुरू किया। जहाँ तक धार्मिक रूढ़िवादिता का प्रश्न है, वह एक उदारवादी व्यक्ति हैं। उन्हीं की शिक्षा से मुझे स्वतन्त्रता के ध्येय के लिये अपने जीवन को समर्पित करने की प्रेरणा मिली। किन्तु वे नास्तिक नहीं हैं। उनका ईश्वर में दृढ़ विश्वास है। वे मुझे प्रतिदिन पूजा–प्रार्थना के लिये प्रोत्साहित करते रहते थे। इस प्रकार से मेरा पालन–पोषण हुआ। असहयोग आन्दोलन के दिनों में राष्ट्रीय कालेज में प्रवेश लिया। यहाँ आकर ही मैंने सारी धार्मिक समस्याओं दृ यहाँ तक कि ईश्वर के अस्तित्व के बारे में उदारतापूर्वक सोचना, विचारना तथा उसकी आलोचना करना शुरू किया। पर अभी भी मैं पक्का आस्तिक था। उस समय तक मैं अपने लम्बे बाल रखता था। यद्यपि मुझे कभी–भी सिक्ख या अन्य धर्मों की पौराणिकता और सिद्धान्तों में विश्वास न हो सका था। किन्तु मेरी ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ निष्ठा थी। बाद में मैं क्रान्तिकारी पार्टी से जुड़ा। वहाँ जिस पहले नेता से मेरा सम्पर्क हुआ वे तो पक्का विश्वास न होते हुए भी ईश्वर के अस्तित्व को नकारने का साहस ही नहीं कर सकते थे। ईश्वर के बारे में मेरे हठ पूर्वक पूछते रहने पर वे कहते, "जब इच्छा हो, तब पूजा कर लिया करो।" यह नास्तिकता है, जिसमें साहस का अभाव है। दूसरे नेता, जिनके मैं सम्पर्क में आया, पक्के श्रद्धालु आदरणीय कामरेड शचीन्द्र नाथ सान्याल आजकल काकोरी षडयन्त्र केस के सिलसिले में आजीवन कारवास भोग रहे हैं। उनकी पुस्तक 'बन्दी जीवन' ईश्वर की महिमा का जोर–शोर से गान है। उन्होंने उसमें ईश्वर के ऊपर प्रशंसा के पुष्प रहस्यात्मक वेदान्त के कारण बरसाये हैं। 28 जनवरी, 1925 को पूरे भारत में जो 'दि रिवोल्यूशनरी' (क्रान्तिकारी) पर्चा बाँटा गया था, वह उन्हीं के बौद्धिक श्रम का परिणाम है। उसमें सर्वशक्तिमान और उसकी लीला एवं कार्यों की प्रशंसा की गयी है। मेरा ईश्वर के प्रति अविश्वास का भाव क्रान्तिकारी दल में भी प्रस्फुटित नहीं हुआ था। काकोरी के सभी चार शहीदों ने अपने अन्तिम दिन भजन–प्रार्थना में गुजारे थे। राम प्रसाद 'बिस्मिल' एक रूढ़िवादी आर्य समाजी थे। समाजवाद तथा साम्यवाद में अपने वृहद अध्ययन के बावजूद राजेन लाहड़ी उपनिषद एवं गीता के श्लोकों के उच्चारण की अपनी अभिलाषा को दबा न सके। मैंने उन सब मे सिर्फ एक ही व्यक्ति को देखा, जो कभी प्रार्थना नहीं करता था और कहता था, "दर्शन शास्त्र मनुष्य की दुर्बलता अथवा ज्ञान के सीमित होने के कारण उत्पन्न होता है। वह भी आजीवन निर्वासन की सजा भोग रहा है। परन्तु उसने भी ईश्वर के अस्तित्व को नकारने की कभी हिम्मत नहीं की।

इस समय तक मैं केवल एक रोमान्टिक आदर्शवादी क्रान्तिकारी था। अब तक हम दूसरों का अनुसरण करते थे। अब अपने कन्धों पर जिम्मेदारी उठाने का समय आया था। यह मेरे क्रान्तिकारी जीवन का एक निर्णायक बिन्दु था। 'अध्ययन' की पुकार मेरे मन के गलियारों में गूँज रही थी दृ विरोधियों द्वारा रखे गये तर्कों का सामना करने योग्य बनने के लिये अध्ययन करो। अपने मत के पक्ष में तर्क देने के लिये सक्षम होने के वास्ते पढ़ो। मैंने पढ़ना शुरू कर दिया। इससे मेरे पुराने विचार व विश्वास अद्भुत रूप से परिष्कृत हुए। रोमांस की जगह गम्भीर विचारों ने ली ली। न और अधिक रहस्यवाद, न ही अन्ध ाविश्वास। यथार्थवाद हमारा आधार बना। मुझे विश्वक्रान्ति के अनेक आदर्शों के बारे में पढ़ने का खूब मौका मिला। मैंने अराजकतावादी नेता बाकुनिन को पढ़ा, कुछ साम्यवाद के पिता मार्क्स को, किन्तु अधिक लेनिन, त्रात्स्की, व अन्य लोगों को पढ़ा, जो अपने देश में सफलतापूर्वक क्रान्ति लाये थे। ये सभी नास्तिक थे। बाद में मुझे निरलम्ब स्वामी की पुस्तक 'सहज ज्ञान' मिली। इसमें रहस्यवादी नास्तिकता थी। 1926 के अन्त तक मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि एक सर्वशक्तिमान परम आत्मा की बात, जिसने ब्रह्माण्ड का सृजन, दिग्दर्शन और संचालन किया, एक कोरी बकवास है। मैंने अपने इस अविश्वास को प्रदर्शित किया। मैंने इस विषय पर अपने दोस्तों से बहस की। मैं एक घोषित नास्तिक हो चुका था। मई 1927 में मैं लाहौर में गिरफ्तार हुआ। रेलवे पुलिस हवालात में मुझे एक महीना काटना पड़ा। पुलिस अफसरों ने मुझे बताया कि मैं लखनऊ में था, जब वहाँ काकोरी दल का मुकदमा चल रहा था, कि मैंने उन्हें छुड़ाने की किसी योजना पर बात की थी, कि उनकी सहमति पाने के बाद हमने कुछ बम प्राप्त किये थे, कि 1927 में दशहरा के अवसर पर उन

बमों में से एक परीक्षण के लिये भीड़ पर फेंका गया, कि यदि मैं क्रान्तिकारी दल की गतिविधियों पर प्रकाश डालने वाला एक वक्तव्य दे दूँ, तो मुझे गिरफ्तार नहीं किया जायेगा और इसके विपरीत मुझे अदालत में मुखबिर की तरह पेश किये बगैर रिहा कर दिया जायेगा और इनाम दिया जायेगा। मैं इस प्रस्ताव पर हँसा। यह सब बेकार की बात थी। हम लोगों की भाँति विचार रखने वाले अपनी निर्दोष जनता पर बम नहीं फेंका करते। एक दिन सुबह सी0 आई0 डी0 के वरिष्ठ अधीक्षक श्री न्यूमन ने कहा कि यदि मैंने वैसा वक्तव्य नहीं दिया, तो मुझ पर काकोरी केस से सम्बन्धित विद्रोह छेड़ने के षडयन्त्र तथा दशहरा उपद्रव में क्रूर हत्याओं के लिये मुकदमा चलाने पर बाध्य होंगे और कि उनके पास मुझे सजा दिलाने व फाँसी पर लटकवाने के लिये उचित प्रमाण हैं। उसी दिन से कुछ पुलिस अफसरों ने मुझे नियम से दोनो समय ईश्वर की स्तुति करने के लिये फुसलाना शुरू किया। पर अब मैं एक नास्तिक था। मैं स्वयं के लिये यह बात तय करना चाहता था कि क्या शान्ति और आनन्द के दिनों में ही मैं नास्तिक होने का दम्भ भरता हूँ या ऐसे कठिन समय में भी मैं उन सिद्धान्तों पर अडिग रह सकता हूँ। बहुत सोचने के बाद मैंने निश्चय किया कि किसी भी तरह ईश्वर पर विश्वास तथा प्रार्थना मैं नहीं कर सकता। नहीं, मैंने एक क्षण के लिये भी नहीं की। यही असली परीक्षण था और मैं सफल रहा। अब मैं एक पक्का अविश्वासी था और तब से लगातार हूँ। इस परीक्षण पर खरा उतरना आसान काम न था। 'विश्वास' कष्टों को हलका कर देता है। यहाँ तक कि उन्हें सुखकर बना सकता है। ईश्वर में मनुष्य को अत्यधिक सान्त्वना देने वाला एक आधार मिल सकता है। उसके बिना मनुष्य को अपने ऊपर निर्भर करना पड़ता है। तूफान और झंझावात के बीच अपने पाँवों पर खड़ा रहना कोई बच्चों का खेल नहीं है। परीक्षा की इन घड़ियों में अहंकार यदि है, तो भाप बन कर उड़ जाता है और मनुष्य अपने विश्वास को ठुकराने का साहस नहीं कर पाता। यदि ऐसा करता है, तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उसके पास सिर्फ अहंकार नहीं वरन् कोई अन्य शक्ति है। आज बिलकुल वैसी ही स्थिति है। निर्णय का पूरा–पूरा पता है। एक सप्ताह के अन्दर ही यह घोषित हो जायेगा कि मैं अपना जीवन एक ध्येय पर न्योछावर करने जा रहा हूँ। इस विचार के अतिरिक्त और क्या सान्त्वना हो सकती है? ईश्वर में विश्वास रखने वाला हिन्दू पुनर्जन्म पर राजा होने की आशा कर सकता है। एक मुसलमान या ईसाई स्वर्ग में व्याप्त समृद्धि के आनन्द की तथा अपने कष्टों और बलिदान के लिये पुरस्कार की कल्पना कर सकता है। किन्तु मैं क्या आशा करूँ? मैं जानता हूँ कि जिस क्षण रस्सी का फन्दा मेरी गर्दन पर लगेगा और मेरे पैरों के नीचे से तखघ्ता हटेगा, वह पूर्ण विराम होगा दृ वह अन्तिम क्षण होगा। मैं या मेरी आत्मा सब वहीं समाप्त हो जायेगी। आगे कुछ न रहेगा। एक छोटी सी जूझती हुई जिन्दगी, जिसकी कोई ऐसी गौरवशाली परिणति नहीं है, अपने में स्वयं एक पुरस्कार होगी दृ यदि मुझमें इस दृष्टि से देखने का साहस हो। बिना किसी स्वार्थ के यहाँ या यहाँ के बाद पुरस्कार की इच्छा के बिना, मैंने अनासक्त भाव से अपने जीवन को स्वतन्त्रता के ध्येय पर समर्पित कर दिया है, क्योंकि मैं और कुछ कर ही नहीं सकता था। जिस दिन हमें इस मनोवृत्ति के बहुत–से पुरुष और महिलाएँ मिल जायेंगे, जो अपने जीवन को मनुष्य की सेवा और पीड़ित मानवता के उद्धार के अतिरिक्त कहीं समर्पित कर ही नहीं सकते, उसी दिन मुक्ति के युग का शुभारम्भ होगा। वे शोषकों, उत्पीड़कों और अत्याचारियों को चुनौती देने के लिये उत्प्रेरित होंगे। इस लिये नहीं कि उन्हें राजा बनना है या कोई अन्य पुरस्कार प्राप्त करना है यहाँ या अगले जन्म में या मृत्योपरान्त स्वर्ग में। उन्हें तो मानवता की गर्दन से दासता का जुआ उतार फेंकने और मुक्ति एवं शान्ति स्थापित करने के लिये इस मार्ग को अपनाना होगा। क्या वे उस रास्ते पर चलेंगे जो उनके अपने लिये खघ्तरनाक किन्तु उनकी महान आत्मा के लिये एक मात्र कल्पनीय रास्ता है। क्या इस महान ध्येय के प्रति उनके गर्व को अहंकार कहकर उसका गलत अर्थ लगाया जायेगा? कौन इस प्रकार के घृणित विशेषण बोलने का साहस करेगा ? या तो वह मूर्ख है या धूर्त। हमें चाहिए कि उसे क्षमा कर दें, क्योंकि वह उस हृदय में उद्वेलित उच्च विचारों, भावनाओं, आवेगों तथा उनकी गहराई को महसूस नहीं कर सकता। उसका हृदय मांस के एक टुकड़े की तरह मृत है। उसकी आँखों पर अन्य स्वार्थों के प्रेतों की छाया पड़ने से वे कमजोर हो गयी हैं। स्वयं पर भरोसा रखने के गुण को सदैव अहंकार की संज्ञा दी जा सकती है। यह दुखपूर्ण और कष्टप्रद है, पर चारा ही क्या है ?

आलोचना और स्वतन्त्र विचार एक क्रान्तिकारी के दोनो अनिवार्य गुण हैं। क्योंकि हमारे पूर्वजों ने किसी परम आत्मा के प्रति विश्वास बना लिया था। अतः कोई भी व्यक्ति जो उस विश्वास को सत्यता या उस परम आत्मा के अस्तित्व को ही चुनौती दे, उसको विधर्मी, विश्वासघाती कहा जायेगा। यदि उसके तर्क इतने अकाट्य हैं कि उनका खण्डन वितर्क द्वारा नहीं हो सकता और उसकी आस्था इतनी प्रबल है कि उसे ईश्वर के प्रकोप से होने वाली विपत्तियों का भय दिखा कर दबाया नहीं जा सकता तो उसकी यह कह कर निन्दा की

जायेगी कि वह वृथाभिमानी है। यह मेरा अहंकार नहीं था, जो मुझे नास्तिकता की ओर ले गया। मेरे तर्क का तरीका संतोषप्रद सिद्ध होता है या नहीं इसका निर्णय मेरे पाठकों को करना है, मुझे नहीं। मैं जानता हूँ कि ईश्वर पर विश्वास ने आज मेरा जीवन आसान और मेरा बोझ हलका कर दिया होता। उस पर मेरे अविश्वास ने सारे वातावरण को अत्यन्त शुष्क बना दिया है। थोड़ा–सा रहस्यवाद इसे कवित्वमय बना सकता है। किन्तु मेरे भाग्य को किसी उन्माद का सहारा नहीं चाहिए। मैं यथार्थवादी हूँ। मैं अन्तः प्रकृति पर विवेक की सहायता से विजय चाहता हूँ। इस ध्येय में मैं सदैव सफल नहीं हुआ हूँ। प्रयास करना मनुष्य का कर्तव्य है। सफलता तो संयोग तथा वातावरण पर निर्भर है। कोई भी मनुष्य, जिसमें तनिक भी विवेक शक्ति है, वह अपने वातावरण को तार्किक रूप से समझना चाहेगा। जहाँ सीधा प्रमाण नहीं है, वहाँ दर्शन शास्त्र का महत्व है। जब हमारे पूर्वजों ने फुरसत के समय विश्व के रहस्य को, इसके भूत, वर्तमान एवं भविष्य को, इसके क्यों और कहाँ से को समझने का प्रयास किया तो सीधे परिणामों के कठिन अभाव में हर व्यक्ति ने इन प्रश्नों को अपने ढ़ंग से हल किया। यही कारण है कि विभिन्न धार्मिक मतों में हमको इतना अन्तर मिलता है, जो कभी–कभी वैमनस्य तथा झगड़े का रूप ले लेता है। न केवल पूर्व और पश्चिम के दर्शनों में मतभेद है, बल्कि प्रत्येक गोलार्ध के अपने विभिन्न मतों में आपस में अन्तर है। पूर्व के धर्मों में, इस्लाम तथा हिन्दू धर्म में जरा भी अनुरूपता नहीं है। भारत में ही बौद्ध तथा जैन धर्म उस ब्राह्मणवाद से बहुत अलग है, जिसमें स्वयं आर्यसमाज व सनातन धर्म जैसे विरोधी मत पाये जाते हैं। पुराने समय का एक स्वतन्त्र विचारक चार्वाक है। उसने ईश्वर को पुराने समय में ही चुनौती दी थी। हर व्यक्ति अपने को सही मानता है। दुर्भाग्य की बात है कि बजाय पुराने विचारकों के अनुभवों तथा विचारों को भविष्य में अज्ञानता के विरुद्ध लड़ाई का आधार बनाने के हम आलसियों की तरह, जो हम सिद्ध हो चुके हैं, उनके कथन में अविचल एवं संशयहीन विश्वास की चीख पुकार करते रहते हैं और इस प्रकार मानवता के विकास को जड़ बनाने के दोषी हैं।

सिर्फ विश्वास और अन्ध विश्वास खघ्तरनाक है। यह मस्तिष्क को मूढ़ और मनुष्य को प्रतिक्रियावादी बना देता है। जो मनुष्य अपने को यथार्थवादी होने का दावा करता है, उसे समस्त प्राचीन रूढ़िगत विश्वासों को चुनौती देनी होगी। प्रचलित मतों को तर्क की कसौटी पर कसना होगा। यदि वे तर्क का प्रहार न सह सके, तो टुकड़े–टुकड़े होकर गिर पड़ेगा। तब नये दर्शन की स्थापना के लिये उनको पूरा धराशायी करके जगह साफ करना और पुराने विश्वासों की कुछ बातों का प्रयोग करके पुनर्निमाण करना। मैं प्राचीन विश्वासों के ठोसपन पर प्रश्न करने के सम्बन्ध में आश्वस्त हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि एक चेतन परम आत्मा का, जो प्रकृति की गति का दिग्दर्शन एवं संचालन करता है, कोई अस्तित्व नहीं है। हम प्रकृति में विश्वास करते हैं और समस्त प्रगतिशील आन्दोलन का ध्येय मनुष्य द्वारा अपनी सेवा के लिये प्रकृति पर विजय प्राप्त करना मानते हैं। इसको दिशा देने के पीछे कोई चेतन शक्ति नहीं है। यही हमारा दर्शन है। हम आस्तिकों से कुछ प्रश्न करना चाहते हैं।

यदि आपका विश्वास है कि एक सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक और सर्वज्ञानी ईश्वर है, जिसने विश्व की रचना की, तो कृपा करके मुझे यह बतायें कि उसने यह रचना क्यों की? कष्टों और संतापों से पूर्ण दुनिया दृ असंख्य दुखों के शाश्वत अनन्त गठबन्धनों से ग्रसित! एक भी व्यक्ति तो पूरी तरह संतृष्ट नही है। कृपया यह न कहें कि यही उसका नियम है। यदि वह किसी नियम से बँधा है तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है। वह भी हमारी ही तरह नियमों का दास है। कृपा करके यह भी न कहें कि यह उसका मनोरंजन है। नीरो ने बस एक रोम जलाया था। उसने बहुत थोड़ी संख्या में लोगों की हत्या की थी। उसने तो बहुत थोड़ा दुख पैदा किया, अपने पूर्ण मनोरंजन के लिये। और उसका इतिहास में क्या स्थान है? उसे इतिहासकार किस नाम से बुलाते हैं? सभी विषैले विशेषण उस पर बरसाये जाते हैं। पन्ने उसकी निन्दा के वाक्यों से काले पुते हैं, भर्त्सना करते हैं दृ नीरो एक हृदयहीन, निर्दयी, दुष्ट। एक चंगेज खाँ ने अपने आनन्द के लिये कुछ हजार जानें ले लीं और आज हम उसके नाम से घृणा करते हैं। तब किस प्रकार तुम अपने ईश्वर को न्यायोचित ठहराते हो? उस शाश्वत नीरो को, जो हर दिन, हर घण्टे ओर हर मिनट असंख्य दुख देता रहा, और अभी भी दे रहा है। फिर तुम कैसे उसके दुष्कर्मों का पक्ष लेने की सोचते हो, जो चंगेज खाँ से प्रत्येक क्षण अधिक है? क्या यह सब बाद में इन निर्दोष कष्ट सहने वालों को पुरस्कार और गलती करने वालों को दण्ड देने के लिये हो रहा है? ठीक है, ठीक है। तुम कब तक उस व्यक्ति को उचित ठहराते रहोगे, जो हमारे शरीर पर घाव करने का साहस इसलिये करता है कि बाद में मुलायम और आरामदायक मलहम लगायेगा ? ग्लैडिएटर संस्था के व्यवस्थापक कहाँ तक उचित करते थे कि एक भूखे खघूंखघ्वार शेर के सामने मनुष्य को फेंक दो कि, यदि वह उससे जान बचा लेता है, तो उसकी खूब देखभाल की जायेगी? इसलिये मैं पूछता हूँ कि उस चेतन परम आत्मा ने इस विश्व और उसमें मनुष्यों की रचना क्यों की? आनन्द लूटने के

लिये? तब उसमें और नीरो में क्या फर्क है ?

तुम मुसलमानो और ईसाइयो! तुम तो पूर्वजन्म में विश्वास नहीं करते। तुम तो हिन्दुओं की तरह यह तर्क पेश नहीं कर सकते कि प्रत्यक्षतः निर्दोष व्यक्तियों के कष्ट उनके पूर्वजन्मों के कर्मों का फल है। मैं तुमसे पूछता हूँ कि उस सर्वशक्तिशाली ने शब्द द्वारा विश्व के उत्पत्ति के लिये छः दिन तक क्यों परिश्रम किया? और प्रत्येक दिन वह क्यों कहता है कि सब ठीक है? बुलाओ उसे आज। उसे पिछला इतिहास दिखाओ। उसे आज की परिस्थितियों का अध्ययन करने दो। हम देखेंगे कि क्या वह कहने का साहस करता है कि सब ठीक है। कारावास की काल–कोठरियों से लेकर झोपड़ियों की बस्तियों तक भूख से तड़पते लाखों इन्सानों से लेकर उन शोषित मजदूरों से लेकर जो पूँजीवादी पिशाच द्वारा खून चूसने की क्रिया को धैर्यपूर्वक निरुत्साह से देख रहे हैं तथा उस मानवशक्ति की बर्बादी देख रहे हैं, जिसे देखकर कोई भी व्यक्ति, जिसे तनिक भी सहज ज्ञान है, भय से सिहर उठेगा, और अधिक उत्पादन को जरूरतमन्द लोगों में बाँटने के बजाय समुद्र में फेंक देना बेहतर समझने से लेकर राजाओं के उन महलों तक जिनकी नींव मानव की हड्डियों पर पड़ी है– उसको यह सब देखने दो और फिर कहे दृ सब कुछ ठीक है! क्यों और कहाँ से? यही मेरा प्रश्न है। तुम चुप हो। ठीक है, तो मैं आगे चलता हूँ।

और तुम हिन्दुओ, तुम कहते हो कि आज जो कष्ट भोग रहे हैं, ये पूर्वजन्म के पापी हैं और आज के उत्पीड़क पिछले जन्मों में साधु पुरुष थे, अतः वे सत्ता का आनन्द लूट रहे हैं। मुझे यह मानना पड़ता है कि आपके पूर्वज बहुत चालाक व्यक्ति थे। उन्होंने ऐसे सिद्धान्त गढ़े, जिनमें तर्क और अविश्वास के सभी प्रयासों को विफल करने की काफी ताकत है। न्यायशास्त्र के अनुसार दण्ड को अपराध ी पर पड़ने वाले असर के आधार पर केवल तीन कारणों से उचित ठहराया जा सकता है। वे हैं दृ प्रतिकार, भय तथा सुधार। आज सभी प्रगतिशील विचारकों द्वारा प्रतिकार के सिद्धान्त की निन्दा की जाती है। भयभीत करने के सिद्धान्त का भी अन्त वहीं है। सुध ार करने का सिद्धान्त ही केवल आवश्यक है और मानवता की प्रगति के लिये अनिवार्य है। इसका ध्येय अपराधी को योग्य और शान्तिप्रिय नागरिक के रूप में समाज को लौटाना है। किन्तु यदि हम मनुष्यों को अपराध ी मान भी लें, तो ईश्वर द्वारा उन्हें दिये गये दण्ड की क्या प्रकृति है? तुम कहते हो वह उन्हें गाय, बिल्ली, पेड़, जड़ी–बूटी या जानवर बनाकर पैदा करता है। तुम ऐसे 84 लाख दण्डों को गिनाते हो। मैं पूछता हूँ कि मनुष्य पर इनका सुधारक के रूप में क्या असर है? तुम ऐसे कितने व्यक्तियों से मिले हो, जो यह कहते हैं कि वे किसी पाप के कारण पूर्वजन्म में गधा के रूप में पैदा हुए थे? एक भी नहीं? अपने पुराणों से उदाहरण न दो। मेरे पास तुम्हारी पौराणिक कथाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। और फिर क्या तुम्हें पता है कि दुनिया में सबसे बड़ा पाप गरीब होना है। गरीबी एक अभिशाप है। यह एक दण्ड है। मैं पूछता हूँ कि दण्ड प्रक्रिया की कहाँ तक प्रशंसा करें, जो अनिवार्यतः मनुष्य को और अधिक अपराध करने को बाध य करे? क्या तुम्हारे ईश्वर ने यह नहीं सोचा था या उसको भी ये सारी बातें मानवता द्वारा अकथनीय कष्टों के झेलने की कीमत पर अनुभव से सीखनी थीं? तुम क्या सोचते हो, किसी गरीब या अनपढ़ परिवार, जैसे एक चमार या मेहतर के यहाँ पैदा होने पर इन्सान का क्या भाग्य होगा? चूँकि वह गरीब है, इसलिये पढ़ाई नहीं कर सकता। वह अपने साथियों से तिरस्कृत एवं परित्यक्त रहता है, जो ऊँची जाति में पैदा होने के कारण अपने को ऊँचा समझते हैं। उसका अज्ञान, उसकी गरीबी तथा उससे किया गया व्यवहार उसके हृदय को समाज के प्रति निष्ठुर बना देते हैं। यदि वह कोई पाप करता है तो उसका फल कौन भोगेगा? ईष्वर, वह स्वयं या समाज के मनीषी ? और उन लोगों के दण्ड के बारे में क्या होगा, जिन्हें दम्भी ब्राह्मणों ने जानबूझ कर अज्ञानी बनाये रखा तथा जिनको तुम्हारी ज्ञान की पवित्र पुस्तकों दृ वेदों के कुछ वाक्य सुन लेने के कारण कान में पिघले सीसे की धारा सहन करने की सजा भुगतनी पड़ती थी? यदि वे कोई अपराध करते हैं, तो उसके लिये कौन जिम्मेदार होगा? और उनका प्रहार कौन सहेगा? मेरे प्रिय दोस्तों! ये सिद्धान्त विशेषाधिकार युक्त लोगों के आविष्कार हैं। ये अपनी हथियाई हुई शक्ति, पूँजी तथा उच्चता को इन सिद्धान्तों के आधार पर सही ठहराते हैं। अपटान सिंक्लेयर ने लिखा था कि मनुष्य को बस अमरत्व में विश्वास दिला दो और उसके बाद उसकी सारी सम्पत्ति लूट लो। वह बगैर बड़बड़ाये इस कार्य में तुम्हारी सहायता करेगा। धर्म के उपदेशकों तथा सत्ता के स्वामियों के गठबन्धन से ही जेल, फाँसी, कोड़े और ये सिद्धान्त उपजते हैं।

मैं पूछता हूँ तुम्हारा सर्वशक्तिशाली ईश्वर हर व्यक्ति को क्यों नहीं उस समय रोकता है जब वह कोई पाप या अपराध कर रहा होता है? यह तो वह बहुत आसानी से कर सकता है। उसने क्यों नहीं लड़ाकू राजाओं की लड़ने की उग्रता को समाप्त किया और इस प्रकार विश्वयुद्ध द्वारा मानवता पर पड़ने वाली विपत्तियों से उसे बचाया ? उसने अंग्रेजों के मस्तिष्क में भारत को मुक्त कर देने की भावना क्यों नहीं पैदा की ? वह क्यों नहीं पूँजीपतियों के हृदय में यह परोपकारी उत्साह भर देता कि

वे उत्पादन के साधनों पर अपना व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार त्याग दें और इस प्रकार केवल सम्पूर्ण श्रमिक समुदाय, वरन समस्त मानव समाज को पूँजीवादी बेड़ियों से मुक्त करें? आप समाजवाद की व्यावहारिकता पर तर्क करना चाहते हैं। मैं इसे आपके सर्वशक्तिमान पर छोड़ देता हूँ कि वह लागू करे। जहाँ तक सामान्य भलाई की बात है, लोग समाजवाद के गुणों को मानते हैं। वे इसके व्यावहारिक न होने का बहाना लेकर इसका विरोध करते हैं। परमात्मा को आने दो और वह चीज को सही तरीके से कर दे। अंग्रेजों की हुकूमत यहाँ इसलिये नहीं है कि ईश्वर चाहता है बल्कि इसलिये कि उनके पास ताकत है और हममें उनका विरोध करने की हिम्मत नहीं। वे हमको अपने प्रभुत्व में ईश्वर की मदद से नहीं रखे हैं, बल्कि बन्दूकों, राइफलों, बम और गोलियों, पुलिस और सेना के सहारे। यह हमारी उदासीनता है कि वे समाज के विरुद्ध सबसे निन्दनीय अपराध दृ एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र द्वारा अत्याचार पूर्ण शोषण दृ सफलतापूर्वक कर रहे हैं। कहाँ है ईश्वर? क्या वह मनुष्य जाति के इन कष्टों का मजा ले रहा है? एक नीरो, एक चंगेज, उसका नाश हो!

क्या तुम मुझसे पूछते हो कि मैं इस विश्व की उत्पत्ति तथा मानव की उत्पत्ति की व्याख्या कैसे करता हूँ? ठीक है, मैं तुम्हें बताता हूँ। चार्ल्स डारविन ने इस विषय पर कुछ प्रकाश डालने की कोशिश की है। उसे पढ़ो। यह एक प्रकृति की घटना है। विभिन्न पदार्थों के, नीहारिका के आकार में, आकस्मिक मिश्रण से पृथ्वी बनी। कब? इतिहास देखो। इसी प्रकार की घटना से जन्तु पैदा हुए और एक लम्बे दौर में मानव। डार्विन की 'जीव की उत्पत्ति' पढ़ो। और तदुपरान्त सारा विकास मनुष्य द्वारा प्रकृति के लगातार विरोध ा और उस पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा से हुआ। यह इस घटना की सम्भवतः सबसे सूक्ष्म व्याख्या है।

तुम्हारा दूसरा तर्क यह हो सकता है कि क्यों एक बच्चा अन्धा या लंगड़ा पैदा होता है ? क्या यह उसके पूर्वजन्म में किये गये कार्यों का फल नहीं है ? जीवविज्ञान वेत्ताओं ने इस समस्या का वैज्ञानिक समाधान निकाल लिया है। अवश्य ही तुम एक और बचकाना प्रश्न पूछ सकते हो। यदि ईश्वर नहीं है, तो लोग उसमें विश्वास क्यों करने लगे? मेरा उत्तर सूक्ष्म तथा स्पष्ट है। जिस प्रकार वे प्रेतों तथा दुष्ट आत्माओं में विश्वास करने लगे। अन्तर केवल इतना है कि ईश्वर में विश्वास विश्वव्यापी है और दर्शन अत्यन्त विकसित। इसकी उत्पत्ति का श्रेय उन शोषकों की प्रतिभा को है, जो परमात्मा के अस्तित्व का उपदेश देकर लोगों को अपने प्रभुत्व में रखना चाहते थे तथा उनसे अपनी विशिष्ट स्थिति का अधिकार एवं अनुमोदन चाहते थे। सभी धर्म, समप्रदाय, पन्थ और ऐसी अन्य संस्थाएँ अन्त में निर्दयी और शोषक संस्थाओं, व्यक्तियों तथा वर्गों की समर्थक हो जाती हैं। राजा के विरुद्ध हर विद्रोह हर धर्म में सदैव ही पाप रहा है।

मनुष्य की सीमाओं को पहचानने पर, उसकी दुर्बलता व दोष को समझने के बाद परीक्षा की घड़ियों में मनुष्य को बहादुरी से सामना करने के लिये उत्साहित करने, सभी खघ्तरों को पुरुषत्व के साथ झेलने तथा सम्पन्नता एवं ऐश्वर्य में उसके विस्फोट को बाँध ाने के लिये ईश्वर के काल्पनिक अस्तित्व की रचना हुई। अपने व्यक्तिगत नियमों तथा अभिभावकीय उदारता से पूर्ण ईश्वर की बढ़ा-चढ़ा कर कल्पना एवं चित्रण किया गया। जब उसकी उग्रता तथा व्यक्तिगत नियमों की चर्चा होती है, तो उसका उपयोग एक भय दिखाने वाले के रूप में किया जाता है। ताकि कोई मनुष्य समाज के लिये खघ्तरा न बन जाये। जब उसके अभिभावक गुणों की व्याख्या होती है, तो उसका उपयोग एक पिता, माता, भाई, बहन, दोस्त तथा सहायक की तरह किया जाता है। जब मनुष्य अपने सभी दोस्तों द्वारा विश्वासघात तथा त्याग देने से अत्यन्त क्लेष में हो, तब उसे इस विचार से सान्त्वना मिल सकती हे कि एक सदा सच्चा दोस्त उसकी सहायता करने को है, उसको सहारा देगा तथा वह सर्वशक्तिमान है और कुछ भी कर सकता है। वास्तव में आदिम काल में यह समाज के लिये उपयोगी था। पीड़ा में पड़े मनुष्य के लिये ईश्वर की कल्पना उपयोगी होती है। समाज को इस विश्वास के विरुद्ध लड़ना होगा। मंनुष्य जब अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास करता है तथा यथार्थवादी बन जाता है, तब उसे श्रद्धा को एक ओर फेंक देना चाहिए और उन सभी कष्टों, परेशानियों का पुरुषत्व के साथ सामना करना चाहिए, जिनमें परिस्थितियाँ उसे पटक सकती हैं। यही आज्ञ मेरी स्थिति है। यह मेरा अहंकार नहीं है, मेरे दोस्त! यह मेरे सोचने का तरीका है, जिसने मुझे नास्तिक बनाया है। ईश्वर में विश्वास और रोज-ब-रोज की प्रार्थना को मैं मनुष्य के लिये सबसे स्वार्थी और गिरा हुआ काम मानता हूँ। मैंने उन नास्तिकों के बारे में पढ़ा हे, जिन्होंने सभी विपदाओं का बहादुरी से सामना किया। अतः मैं भी एक पुरुष की भाँति फाँसी के फन्दे की अन्तिम घड़ी तक सिर ऊँचा किये खड़ा रहना चाहता हूँ।

हमें देखना है कि मैं कैसे निभा पाता हूँ। मेरे एक दोस्त ने मुझे प्रार्थना करने को कहा। जब मैंने उसे नास्तिक होने की बात बतायी तो उसने कहा, "अपने अन्तिम दिनों में तुम विश्वास करने लगोगे।" मैंने कहा, "नहीं, प्यारे दोस्त, ऐसा नहीं होगा। मैं इसे अपने लिये अपमान जनक तथा भ्रष्ट होने की बात समझाता हूँ। स्वार्थी कारणों से मैं प्रार्थना नहीं करूँगा।" पाठकों और दोस्तों, क्या यह अहंकार है ? अगर है तो मैं स्वीकार करता हूँ।

हमें अभावों में जीना, सीखना चाहिए

-राहुलदेव आचार्य

जो व्यक्ति अभावों में जीना सीख लेता है, उसको पहली बात तो यह है कि उसको अभाव कभी आयेगा ही नहीं । दूसरी बात यह है कि किसी कारण वश आ भी गया तो उसमें, उस अभाव को सहने की शक्ति आ जायेगी जिससे उसको अधिक कष्ट नहीं होगा । अभाव ग्रस्त व्यक्ति को तो अभाव सहना ही पड़ता है उसकी तो लाचारी है । परन्तु जो व्यक्ति सामर्थ्यवान् व सुसम्पन्न है, आलतुफालतु खर्च कर सकता है, वह यदि अभाव में जीने की आदत या स्वभाव बना लेवे तो वह जीवन में कभी भी अभाव नहीं देखेगा और सदा सुखी बना रहेगा । जैसे हम कहते हैं कि **"दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोए, जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होए ।"** इस दोहे के अनुसार जो व्यक्ति सुख में सुमरन करता है उसको दुःख कभी नहीं होता । इसी प्रकार जो व्यक्ति सम्पन्नता में अपने मन व इन्द्रियों को वश में रखकर अभावों में जीना पसन्द कर लेता है, उसको अभाव कभी नहीं आता । एक बात यह है कि जो सम्पन्नता में भी अभाव यानि मितव्ययी व संयमी रहता है, अभाव इसके लिए सुखकारी बन जाता हैं, दुःखकारी नहीं । कारण उसको अभावों को सहने की आदत व अभ्यास हो जाता है, उसको अभाव कष्टदायक ज्ञात नहीं होता । उसमें सन्तोष की मात्रा अधिक होती है जिससे वह अभाव में भी सुख का अनुभव करता है । सम्पन्नता होने के बाद भी जो व्यक्ति अभावों में प्रसन्न रहता है वह अधिकतर मितव्ययी, सन्तोषी, पुरुषार्थी, मेहनती, साहसी, सहनशील, बुद्धिमान, मृदुभाषी, निराभिमानी, सद्व्यवहारिक व सहृदय भी होता है । ये सभी गुण लगभग अभावो में प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति के पर्यायवाची होते हैं । मितव्ययी को काफी लोग कंजूस कहते हैं, पर यह उनकी भूल है । मितव्ययी वह होता है जो सोच-समझकर खर्च करता है । जहाँ आवश्यकता होती है वहीं खर्च करता है और जहाँ आवश्यकता नहीं होती वहाँ नहीं करता है । मितव्ययी व्यक्ति अनेक अवगुणों से बच जाता है कारण प्रत्येक दुर्गुणों में पैसा लगता है । मितव्ययी पैसा देखकर खर्च करता है इसलिए वह दुर्गुणों से दूर रहता है । कंजूस वह होता है जो अच्छे व परोपकारीकार्यों में भी खर्च करना नहीं चाहता इसलिए कंजूसी मनुष्य का अवगुण है । पूरे पुरुषार्थ के बाद जो मिले, उसी में सन्तोष रखता है, वह सन्तोषी होता है । सन्तोष के लिए किसी कवि ने कहा है,

> **सम्पन्नता होने के बाद भी जो व्यक्ति अभावों में प्रसन्न रहता है वह अधिकतर मितव्ययी, सन्तोषी, पुरुषार्थी, मेहनतीी, साहसी, सहनशील, बुद्धिमान, मृदुभाषी, निराभिमानी, सद्व्यवहारिक व सहृदय भी होता है । ये सभी गुण लगभग अभावो में प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति के पर्यायवाची होते हैं**

"गोधन, गजधन, वाजिधन और रतन धन खान, जब सावे सन्तोष धन सब धन धूली समान ।" इसलिए अभावो में प्रसन्न रहने वाला व्यकि त सदैव मितव्ययी व सन्तोषी ही होता है । बाकी सभी गुण बुद्धिमता, पुरुषार्थ, मेहनत, साहस, धैर्य, मृदुभाषिता, सद्व्यवहारिकता व निरभिमानता आदि भी अभावों में सुखी रहने वाले व्यक्ति के आभूषण होते हैं जिससे वह अपने जीवन को सौन्दर्ययुक्त बनाकर सफलता को प्राप्त करता है ।

ऐसा व्यक्ति ईमानदार भी होता है कारण उसको बेईमानी करने की आवश्यकता ही नहीं पडती कारण वह मितव्ययी, पुरुषार्थी, संयमी व सन्तोषी होता है । ऐसा व्यक्ति देशभक्त भी होता है कारण वह गलत तरीके से धन कमाने का इच्छुक ही नहीं होता इसलिए वह मिलावट करना, कम तोलना, टैक्स व चुंगी की चोरी करना, चोरी का धन खरीदना, रिश्वत लेना, भ्रष्टाचार करना आदि दोषों से बचा रहता है । जो व्यक्ति सौ रुपये कमाकर पच्चास रूपये खर्च करता है, दस रुपये परोपकारी व धार्मिक कार्यों में लगाता है, बाकी चालीस रुपये अपना भविष्य सुन्दर बनाने के लिए बचाता है, उस व्यक्ति के पास अभाव आने व कर्जवान बनने का तो प्रश्न ही नहीं उठता । ऐसा व्यक्ति मृदुभाषी एवं बुद्धिमान भी होता है इसलिए वह अपने पड़ोसी, कर्मचारी, सेवक व अपने कार्य क्षेत्र के सभी लोगों से मिल-जुलकर प्रेम के साथ चलने वाला तथा सबसे अच्छा व्यवहार करने वाला होता है । ऐसी व्यक्ति सत्यवादी भी होगा, साथ ही अपनी आत्मा की आवाज के अनुसार चलने वाला होगा कारण उसको झूठ बोलने की और आत्मा के विरुद्ध काम करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी । जिस व्यक्ति में ऊपर लिखे सभी गुण होगे वह मानवतावादी, राष्ट्रवादी, परोपकारी व नैतिकता का धनी भी अवश्य होगा, इसलिए वह एक मानवता की परिधि में आकर एक सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी अवश्य बन जाता है ।

यजुर्वेद भी कहता है **"तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा, मा गृधः कस्य स्विद्धनम्"** अपने धन को त्याग भाव से बर्ते, न कि उस धन को अपव्यय करने में लिपत हो जावें । लालच मत करो कारण यह धन ईश्वर का है और किसी का नहीं । यदि ईश्वर ने हमें धन दिया है तो हम उसमें से उतना ही खर्च करें जिसमें हमारी आवश्यताएं पूरा हो जावें । आवश्यकताएं भी कम से कम रखनी चाहिए

....शेष पेज नं. ७ पर

मितव्ययता अनेकों दुर्गुणों से बचाती है

-राहुलदेव आचार्य

मितव्ययता से मेरा अभिप्राय ऐसे खर्चों से है जो सोच समझकर उचित जगह पर किये जावें और अनुचित जगह पर नहीं किये जावें । इसी को मितव्ययता कहते हैं । आज कल मित्व्ययी को कुछ लोग कंजूस, कण्टक व अति लोभी की संज्ञा भी दे देते हैं और उसको घृणा की दृष्टि से भी देखने लगते हैं । यह सिर्फ अनुचित ही नहीं बल्कि अव्यवहारिक भी है । वास्तविकता यह है कि मितव्ययता एक बड़ा भारी गुण तो है ही साथही हमारा एक सच्चा मित्र भी है जो हमको अनेकों बुराइयों से बचा लेताहै । या यह कहिए कि मितव्ययता एक ऐसा गुण है जिसके होने पर अनेकों गुण आने लगते है और दुर्गुण दूर भागने लगते हैं, इसलिए हम यह भी कह सकते है कि मितव्ययता गुणों की जननी है और अवगुणों का विनाश करती है । मितव्ययी व्यक्ति जुआ, सुल्फा, गांजा, भांग, शराब आदि बुराईयों से हमेशा ही दूर रहेगा और वेश्यागमन जैसी भयंकर व घातक बुराई को तो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचेगा । वह तास, चौपड़, सिनेमा देखना, व गन्दे उपन्यास पढ़ने को भी समय की बर्बादी समझकर इनसे भी दूर रहने की चेष्टा रखेगा कारण मितव्ययी पैसों को खर्च करने पर तो विशेष ध्यान रखता ही है साथ ही वह समय, स्वास्थ्य, इज्जत व सम्मान आदि का भी पूरा ध्यान रखता है । जिस काम में पैसों के साथ-साथ समय व शरीर की हानि भी होती हो वह काम मितव्ययी कभी नहीं करना चाहेगा । आप जानते ही है कि सभी दुर्गुणों में पैसों के साथ-साथ समय व शरीर की बर्बादी तो होती है, साथ ही इज्जत व सम्मान पर भी आघात पहुंचता है, इसलिए पाठक वृन्द स्वयं ही विचारें कि मितव्ययी इन दुर्गणों को तरफ कभी आँख उठाकर देखेगा भी क्या ? मितव्ययी की बुद्धि बड़ी तर्कपूर्ण होती है । वह न्यायोचित बात को तुरन्त समझ लेता है और उसका जिस काम के करने से क्या हानि और क्या लाभ है, ह समझने में उसे देरी नहीं लगती । वह हानि वाले काम को छोड़कर लाभ वाला काम ही करेगा तब उसका दुर्गुणों से बच जाना और सद्गुणों में प्रवृत्त हो जाना स्वाभाविक है । अधिकतर देखने मे आता है कि मितव्ययी अपने घर का बनाया भोजन ही करके खुश रहताहै बाजार के दही बडे, कचौड़ी, पुचके, चाट तथा बैजीटेबल घी से बनी मिठाईयां जिन पर मक्खियाँ भिनभिनाती रहती है,

इसी प्रकार मितव्ययी का धन परोपकारी व जनहित के कार्यों में लगता है । उसके धन से परिवार, समाज व राष्ट्र उन्नत व समृद्धिशाली बनता है इसीलिए लोग उसका यशोगान व सम्मान भी करते हैं ।

पैसे के लालच में, मन होते हुए भी नहीं खायेगा इससे उसके स्वास्थ्य की रक्षा जबरन ही हो जाती है ।

आपने यह भी देखा होगा कि मितव्ययी कभीभी आलसी व प्रमादी नहीं होता । वह हमेशा क्रियाशील बना रहना चाहता है और अपना काम अपने ही हाथों से करके प्रसन्न रहता है । वह थोड़ी दूर के चलने में, थोड़ा बोझा व भार उठाने में और अपने घरेलू काम काज करने में न तो वह अपनी तौहीन (बेईज्जती) समझता है और न ही कुली, रिक्सा, या टैक्सी की बाट देखता है और उस काम क वह स्वयं ही कर लेता है, इससे पैसों की बचत तो होती ही है साथ ही समय भी बचता है और स्वास्थ्य में भी लाभ होता है । सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसका काम करने का अभ्यास बना रहता है, जो जीवन में उसे हमेशा उन्नति के पथ पर अग्रसर करने में सहयोगी बना रहता है ।

मितव्ययी जहां पैसे कम खर्च करन का ध्यान रखता है, वहीं पैसे ज्यादा कमाने का ध्यान भी रखता है । इसलिए वह ज्यादा मेहनत व परिश्रम करके औरों से ज्यादाधन कमाना चाहेगा और वह अपने स्वभाव के अनुसार उस धन को अपने शरीर पर उचित खर्च करेगा अपने परिवार, समाज व राष्ट्र केलिए ज्यादाखर्च करना चाहेगा । इसी को ही सच्चा वैदिक समाजवाद कहते हैं । जो व्यक्ति अपनी बुद्धि व बल से ज्यादा से ज्यादा कमाता है और अपने सुख साधनों पर कम से कम खर्च करता है वही वैदिक समाजवाद का सच्चा अनुयायी या कार्यकर्त्ता होता है । ऐसा मितव्ययी अपने धन को राष्ट्र का धन समझता है और उसका उपभोग भी उचित मात्रा में यानी त्याग भाव से करता है, उसमें लिप्त नहीं होता जो वेद के मन्त्र 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' (त्याग भाव से भोग करो) का आदेश है उसका सही पालन करता है । ज्यादा खर्चीला व्यक्ति तो त्याग के महत्व को समझता ही नहीं । वह तो खाओ, पीओ और मौज करो वाममार्गी वालों के सिद्धान्त को ही ज्यादा प्रश्रेय देता है । जो राष्ट्र की उन्नति में बाधक सिद्ध होता है । कम खर्च करने वाला व्यक्ति ही गरीब व अनाथ असहाय, व कमजोर व्यक्ति ही गरीब व अनाथ, असहाय, व कमजोर व्यक्ति की मदद कर सकता है । जो व्यक्ति जितना कमायेगा उतना ही खर्च कर देवेगा

उससे जनहित, परोपकार तथा शुभ कार्यों में खर्च करने की उम्मीद हो क्या की जा सकती है ? जिसके पास धन होगा वही तो जरूरत पड़ने पर धन दे सकता है । नहीं होने वाला कहां से देगा ।

देखने में आया है कि मितव्ययी अधिकतर अहिंसक, मृदुभाषी, विनम्र, शान्तिप्रिय, त्यागी, परिश्रमी, संयमी व कुशाग्र बुद्धि वाला होता है । यह गुण मनुष्य को उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर करने के साथ-साथ एक सच्चा मानव (नागरिक) भी बनाते हैं जिनके सहयोग से राष्ट्र उन्नति करता है, विश्व में सुख व शान्ति रहती है और वेद का आदेश 'मनुर्भव' (हे जीव ! तू मानव बन) का पालन भी एक मितव्ययी ही कुछ अंशों में कर पाता है । कंजूस और मितव्ययी में बड़ा अन्तर होता है । कंजूस होना मनुष्य का दोष है जो उसको सब जनहित कार्यों को करने से दूर रखता है और उसको स्वयं की लाभ- हानि की उलझन में लिप्त रखता है । परन्तु मित्व्ययी होना एक गुण है जो बुद्धिपूर्वक हितकारी कार्यों में मनुष्य को प्रवृत करता है । वह अपने शरीर व व्यक्तिगत कार्यों पर तो कम खर्च करता है लेकिन अच्छे कार्यों में कभी पीछे नहीं रहता । महाभारत का यह श्लोक :-

द्वौ सागरे निविष्टव्यौ गले बंद्ध्वा दृढ़ा शिलाम् ।
धनवन्त अदातारं, दरिद्रं चा तपस्विनम् ॥

(जो व्यक्ति धनी है पर दान नहीं देता और जो व्यक्ति दरिद्र है पर वह परिश्रम नहीं करता ऐसे दोनों व्यक्तियों के गले में भारी पत्थर बांधकर समुद्र में डुबो देना चाहिए) कंजूस व्यक्ति पर लागू होता है, मितव्ययी पर नहीं । कंजूस व्यक्ति से कभी भी किसी को लाभ नहीं हो सकता, उस व्यक्ति का होना या न होना समान है वह पृथ्वी पर भार स्वरूप है । इसीलिए महाभारत के रचयिता व्यास ऋषि ने कंजूस के लिए इतना कठोर दण्ड देने का विधान किया है । यह उचित भी है जैसे बन्द पानी पड़ा पड़ा दुषित हो जाता है, उसमें कीड़े पड़ जाते है और वह पानी किसी के भी काम नहीं आता और एक दिन सूखकर समाप्त हो जाता है, इसी प्रकार बन्द पानी की तरह कंजूस का धन भी किसी के काम नहीं आता । वह न तो स्वयं पर खर्च करता है, न परिवार, समाज व राष्ट्र की उन्नति में खर्च करता है व न परोपकार में लगाता है, न किसी को दान देता है । उसका धन चोरों, डकैतो, लुटेरों व ठगों के हाथ ही पड़कर नष्ट हो जाता है । यदि ऐसे नष्ट नहीं होता तो उसके मरने के बाद उसके लड़के लड झड़गकर मुकद्दमें बाजी में नष्ट कर देते हैं । होना उस धन को नष्ट ही है । परन्तु बहता हुआ पानी निर्मल व स्वच्छ रहता है वह पानी नहाने, धोने, पीने, बिजली पैदा करने तथा सिंचाई करने के काम आता है । जिससे मनुष्य ही नहीं प्राणी मात्र का भला व कल्याण होता है । इसी प्रकार मितव्ययी का धन परोपकारी व जनहित के कार्यों में लगता है । उसके धन से परिवार, समाज व राष्ट्र उन्नत व समृद्धिशाली बनता है इसीलिए लोग उसका यशोगान व सम्मान भी करते हैं । हमारे ऋषि मुनियों ने धन की तीन गतियाँ बताई है । दान, भोग और सर्वनाश । कंजूस का धन तीसरी गति को, मितव्ययी का धन प्रथम गति को और फिजूल खर्च करने वाले का धन द्वितीय गति को प्राप्त होता है ।

मितव्ययी में जो सबसे बड़ा गुण होता है, वह है उसका लेन देन में स्वच्छ व ईमानदार रहना । मितव्ययी अपनी इज्जत को धन से ज्यादा महत्व देता है । इसीलिए वह लेन-देन व व्यवहार में सही रहना चाहता है । लेन-देन में सही व्यक्ति को ही ईमानदार कहा जाता है जो सब गुणों से उत्तम है । इसीलिए मनु महाराज ने भी इस श्लोक के द्वारा अर्थ की शुद्धि को ही सर्वोपरि माना है ।

सर्वेषामेव शौचानामर्थ शौचं परं स्मृतम् ।
योऽर्थे शुचि स शुचिर्न मृद्वारि शुचिः शुचिः॥

सभी प्रकार की शुद्धियों में धन संबंधित शुद्धि सबसे उत्तम है । जो मनुष्य धन के विषय में शुद्ध है वही शुद्ध है । मैंने कई वैदिक विद्वानों को देखा है जो वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् होते हु भी पैसों के मामले में कमजोर होते हैं । झूठ बोलकर दक्षिणा ज्यादा लेने की कोशिश करते हैं । रेल भाड़ा व अन्य खर्चे ज्यादा लेने के लिए बढ़ाकर बता देते हैं आदि-आदि । इसीलिए कहा गया है **'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः'** आचारहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते ।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि कंजूस और फिजूल खर्ची के बीच की श्रेणी का नाम मितव्ययता है, यानि इन दोनों के गुण मितव्ययी में होते हैं और इनके अवगुण नहीं होते या यह कहिए कि मितव्ययता दोनों का परिष्कृत (संशोधित) रूप है । मितव्ययी अपनी सुबुद्धि से फिजू खचीले व्यक्ति के अवगुण जैसे शराब पीना, जूआ खेलना, धूम्रपान करना, आदि को ग्रहण नहीं करता और उसके गुण जैसे उदारता, सहृदयता, दया, करुणा व परोपकारिता आदि को ग्रहण कर लेता है । इसी प्रकार कंजूस व्यक्ति के अवगुण अति स्वार्थ, अन्याय, छल, कपट व बेईमानी आदि को नहीं अपनाता और उसके गुण कम खर्च करना, ज्यादा परिश्रम करना, पैसों का हिसाब पूरा रखना तथा संयमी होना आदि को अपना लेता है जिससे वह अपना जीवन उत्तम बनाकर परिवार, समाज व राष्ट्र की सेवा कर पाता है और अपनी जीवन भी सुखी बना पाता है ।

कुछ उपवादों को छोड़कर जितने भी महापुरुष हुए हैं सभी मितव्यी ही हुए है । जैसे महात्मा चाणक्य, महर्षि दयानन्द, महात्मा हंसराज, लालबहादुर शास्त्री व महात्मा गांधी आदि । जिसने महात्मा चाणक्या का जीवनवृत पढ़ा होगा, वे जानते हैं कि चाणक्य एक सम्राज्य का महामंत्री होते हुए भी जंगल में कुटिया बनाकर कम से कम खर्च करके त्याग पूर्ण जीवन व्यतीत

...४ पेज का शेष

करता था। हाथ से लकड़ी काट कर नित्य यज्ञ करता था, गऊ के गोबर से उपलों से आग जलाकर स्वयं भोजन बनाता था और एकान्त ज़ीवन व्यतीत करते हुए बड़ी कुशलतापूर्वक राज्य का कार्य भी सम्भाला था जिसके कारण वह महान पुरुष कहलाया। **महर्षि दयानन्द के पत्राचारों को पढ़ने से ज्ञान होता है कि वे एक पैसे का भी कितना ज्यादा महत्व समझते थे। वे एक-एक पैसे का हिसाब स्वयं देते थे और दूसरों से लेते थे।** मितव्ययता का गुण उनमें अत्यधिक था जो उनकी महानता को प्रकट करता है। महात्मा हंसराज का जीवन तो पूर्ण त्यागमय था। वे त्याग की प्रतिमूर्ति थे। वे डी०ए०भी० कालेज लाहौर के प्रिन्सिपल होते हुए भी संस्था से एक पैसा भी वेतन नहीं लेते थे और निःस्वार्थ भाव से कर्त्तव्य पारायणता के साथ अनवरत सेवा करते थे। उनकी जीवन अति सरल व सादा था जो उनको महानता की उच्चकोटि तक पहुंचाया। यह तो सर्वविदित है कि लालबहादुर शास्त्री, मन्त्री बनने के बाद भी एक पुराना कोट के छोड़कर दूसरा कोट नहीं रखते थे। जब उनको विदेश यात्रा पर जाना पड़ा तब उनको नेहरू जी का कोट ले जाना पड़ा था। इन गुणों ने उनको प्रधानमंत्री पद तक पहुंचा दिया। महात्मा गांधी के बारें में सभी जानते है कि वे पैसे की शुद्धता और खर्चे पर कितना ज्यादा ध्यान रखते थे। प्रयोग किये हु लिफाफे के कागज को वे रद्दी की टोकरी में न फेंक कर लिखने के काम लेते थे। मितव्ययता के उनके जीवनं में अनकों उदाहरण मिलते हैं लेकिन लेख की विस्तारता का ध्यान रखते हुए उनको यहां लिखना उचित नहीं समझता। इतना ही काफी समझकर मैं अपने इस उपयोगी, हितकारी, शिक्षाप्रद व प्रेणादायक लेख को यही विराम देता हूँ। मैं भी इन बातों का अपने जीवन में पूरा ध्यान रखता हूँ। जिससे शरीर संयमी व स्वस्थ्य बना रहे। बाकी धन राष्ट्र के काम व परोपकारी काम में लगाना चाहिए। वेद के सन्देश को अभावों में जीने वाला व्यक्ति अपने जीवन में पूर्णतः वेदों का अनुसरण करता है जिससे वह ईश्वर-पुत्र कहलाने का अधिकारी बनता है तथा मोक्ष-मार्ग पर अग्रसर होता है।

जो व्यक्ति अनाप-सनाप खर्च करेगा, छोटी-छोटी बातों में हवाई जहाज, ए.सी. टू टीयर, राजधानी व शताब्दी आदि रेलगाड़ियों से यात्रा करेगा। थोड़ा चलने के लिए ही टैक्सी, टैम्पू या रिक्शा करेगा, घर, आफिस व कार में एसी लगायेगा, कीमती कपड़े पहनेगा, होटलों में खायेगा, उस व्यक्ति का असंयमी होना जरूरी है तथा जब वह अपने ऊपर ही इतना अधिक खर्च कर देगा और कुछ बचायेगा ही नहीं, तब वह दान व परोपकारी कार्य कहाँ से करेगा। यह एक स्वाभाविक बात है कि जो व्यक्ति अपने शरीर पर अधिक खर्च करता है यानि ऐशो आराम में डूबा रहता है, वह व्यक्ति दूसरों के दुःखों व कष्टों को कभी नहीं देखता और मानवता से बहुत दूर रहता है। इसलिए कम खर्च करके अभावों में जीकर प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति ही सच्चा मानव हो सकता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के गुणों को ग्रहण करने अपने दुर्गुणों को छोड़ने का भी ध्यान रखता है कारण वह मननशील होता है जो मानव की सच्ची पहचान होती है।

ईश्वर ने मुझे अधिक धनाढ्य तो नहीं बनाया, पर एक सामान्य परिस्थिति का मुझे अवश्य बनाया है। मैं यदि चाहूँ तो साधारण से काम के लिए हवाई जहाज, ए.सी. फर्स्ट क्लास, टू टायर व राजधानी से यात्रा कर सकता हूँ। अच्छे-अच्छे कीमती कपड़े पहन सकता हूँ। बढ़िया से बढ़िया साबुन, तेल, शैम्पू लगा सकता हूँ। होटलों में खा सकता हूँ, थोड़ी दूर चलने के लिए टैक्सी व रिक्शा कर सकता हूँ। पर मैंने मेरा स्वभाव बना रखा है कि कहीं बहुत जरूरी काम हो तो मैं हवाई जहाज से जाता हूँ। मैं हमेशा मेल या एक्सप्रेस गाड़ी में रिजर्वेशन करवाकर ही जाता हूँ। एसी, राजधानी व शताब्दी में कभी जाने की इच्छा नहीं करता हूँ कभी-कभी मेरे बच्चे नाराज भी होते हैं पर मैं उन्हें समझा देता हूँ। साधारण कीमत के कपड़े पहनता हूँ। चार-पांच मील पैदल चलना, १५-२० मंजिल नित्य चढ़ना-उतरना तो मेरे स्वभाव का अंग बन गया है, जबकि मैं पूरे ८० वर्षों का हो गया हूँ। लम्बी यात्रा में मैं घर का बनाया भोजन ही साथ ले जाता हूँ, गाड़ी का भोजन मैं नहीं खाता। घर में खाने-पीने में दूध, घी, फलों की कमी तो नहीं रखते, फिर भी किसी समय साग, सब्जी न भी हो तो नमक, मिर्च, निम्बू, अचार के साथ भी रोटी खाकर प्रसन्न रहता हूँ। सभी प्रकार के नशों से तो मैं कोसों दूर रहता हूँ। इस सादे जीवन में मुझे जो आनन्द आता है, वह शायद अधिक खर्च करने वाले कों भी नहीं आता होगा। अधिक खर्च करने वाले को भी नहीं आता होगा। अधिक खर्च करने वाले को अधिक खर्च करके भी असन्तोष रहता है, मुझे कम खर्च करके भी सन्तोष रहता है। ईश्वर की कृपा से मुझे चलने-फिरने, चढ़ने-उतरने में बिल्कुल आलस्य नहीं आता। मैंने अपने जीवन में तीन महापुरुषों को आदर्श माना है। वैसे गुरु तो मेरा बाल ब्रह्मचारी, सत्य पर आरूढ़, परम् परोपकारी, मानवता का उपासक, परम ईश्वर विश्वासी, गौ व राष्ट्रभक्त महर्षि दयानन्द है। इसी के बताए वेद-मार्ग पर चलने का प्रयत्न करता हूँ, पर उन जैसा जीवन बनाना तो हर व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं, परन्तु जो मेरे तीन आदर्श (१) महान् नीतिज्ञ महात्मा चाणक्य (२) सादगी की प्रतिमूर्ति महात्मा हंसराज (३) ईमानदारी का सही स्वरूप लालबहादुर शास्त्री हैं। इन तीनों का जीवन बहुत ही सरल, सादा, कर्त्तव्यपरायण, सच्चाई व ईमानदारी से ओत-प्रोत था। उनके विचार और कर्म महान् थे, पर इनके समान यदि कोई चाहे तो हर व्यक्ति बन सकता है।

देश को आजाद कराने का मन्त्र किसने दिया ?

-मनमोहन कुमार आर्य

भारत संसार का सबसे पुराना देश है। इसका पुराना नाम आर्यावर्त था। सृष्टि के आदिकाल में ईश्वर ने तिब्बत में मनुष्यों को उत्पन्न किया था। ईश्वर ने ही इन मनुष्यों को भाषा, सत्यधर्म और संस्कृति के ज्ञान के लिए चार वेदों का ज्ञान दिया था। ब्रह्मा जी मैथुनी सृष्टि में उत्पन्न प्रथम ऋषि, वेदज्ञ, योगी, ईश्वर व आत्मा के सत्य स्वरूप के जानकार एवं आचार व धर्म शास्त्र के जानकार एवं आचार व धर्म शास्त्र के ज्ञाता थे। उन्होंने ही सृष्टि के आरम्भ में अन्य लोगों में वेदों का प्रचार किया था। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद पढ़कर मनुष्य इस सृष्टि को भली प्रकार से जान व समझ सकते हैं। ऐसा ही हुा भी था। समय के साथ साथ तिब्बत में मनुष्यों की संख्या में वृद्धि होने लगी और आपस में लड़ाई झगड़े भी होने लगे। उस समय तिब्बत के अतिरिक्त सारी पृथिवी मनुष्यों से शून्य थी। इस कारण उन लोगों में सीधे व सरल स्वभाव के आर्य तिब्बत से सीधे भारत की भूमि में आकर इस भूमि का सर्वोत्तम जानकर यहां बस गये। इससे पूर्व यह पूरी भूमि खाली पड़ी थी। यहां कोई मनुष्य जाति रहती नहीं थी। तिब्बत में रहते हुे आर्यों ने विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार के वायुयान व अन्य वैज्ञानिक उपकरण आदि बना लिये थे। यह लोग अपने अपने वायुयानों में आकाश में भ्रमण करते थे। इन्हें विश्व में जहां जो स्थान जीवन यापन के लिए सुन्दर व अनुकूल जलवायु वाला लगता था, वहां अपने परिवारों व मित्र-संबंधियों को ले जाकर वहां बस्तियां बसा दिया करते थे। इस प्रकार वेद के अनुयायी आर्यों द्वारा तिब्बत से आरम्भ होकर पूरे विश्व में मनुष्यों को बसाया और समय के साथ-साथ नये नये देश व भाषायें आदि बनती गईं। मनुष्योत्पत्ति को हुए १.९६ अरब वर्ष हो चुके हैं। इतनी लम्बी अवधि में भारत के लोग विश्व के अनेक देशों में जाते और बसते रहे और इस प्रकार से विश्व के अनेक देश बसते गये।

भारत की बात करें तो यहां वैदिक धर्म व संस्कृति महाभारत काल व उससे कुछ सौ वर्षों पूर्व तक उन्नति के चरम पर रही है। भारत और विश्व में एक ही धर्म व संस्कृति थी जो वेद पर अधारित थी। पांच हजार वर्ष पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसमें बहुत बड़ी संख्या में वीर सैनिकों सहित विद्वान् भी मारे गये। इस कारण भारत में अव्यवस्था फैल गई। शिक्षा का प्रचार व विस्तार बन्द हो गया। समय के साथ लोगों में वेद व धर्म की बातें भी समझने में कृतकार्यता नहीं रही। इस अक्षमता से विश्व में आर्य संस्कृति का प्रचार भी बाधित हुआ। वहां भी अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न हो गये। भारत में भी समय के साथ यज्ञों में पशु हिंसा होने लगी। इसका परिणाम बौद्ध व जैन मत का आविर्भाव हुआ। इसके बाद संसार में ईसाई मत का आविर्भाव भी हुआ। इन तीन मतों से पुराना मत पारसी मत था जो एक धार्मिक पुरुष जरदुस्त महाशय ने चलाया था। उन्होंने जो धर्म पुस्तक दी वह जन्दावस्ता के नाम से प्रसिद्ध है। ईसाई मत के बाद इस्लाम मत का उद्भव होता है। यह सभी मत सत्य वेद मत के विलुप्त होने के कारण उत्पन्न हुए। भारत में बौद्ध व जैन मत की स्थापना व आचार्य शंकराचार्य के वैदिक मत के प्रचार से भी अज्ञान, अशिक्षा, अन्धविश्वास, कुरीतियां, सामाजिक असामनता दूर नहीं हुई। वेदों का अल्प ज्ञान ही सीमित संख्या में लोगों में प्रचलित रहा। बाद में सायण आदि कुछ वेदभाष्यकार हुए परन्तु वह वेद के पदों व शब्दों के यथार्थ अर्थों को न जान सके जिस कारण वेदों के सत्य अर्थों का प्रचार होने के स्थान पर मिथ्या अर्थों का ही प्रचार हुआ। इस प्रकार अज्ञान बढ़ता रहा। समाज कमजोर हो गया। तभी सन् ७१५ ईस्वी में मोहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया। भारत में अन्धविश्वासों और आपसी फूट का परिणाम यह हुआ कि उसने राजा दाहिर को पराजित किया। उसके बाद भारत पर विदेशी लुटेरों के आक्रमण जारी रहे और भारत का बडा भाग गुलाम हो गया। पहले भारत मुसलमानों का और बाद में अंग्रेजों का दास बना।

अंग्रेजों के समय में ऋषि दयानन्द सरस्वती जी का प्रादुर्भाव होता है। सन् १८६३ में स्वामी दयानन्द जी ने मथुरा में गुरु विरजानन्द सरस्वती से वेदादि शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर वेदों का प्रचार करने के लिए कार्यक्षेत्र में पदार्पण किया। उस काल में देश में धार्मिक अन्धविश्वास अपनी चरम सीमा पर थे। देश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना ऊंच-नीच का व्यवहार करने वाली जाति प्रथा प्रचलित थी। स्त्री व शूद्रों को वेद और विद्या के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। मुस्लिम काल में हिन्दुओं पर अत्याचारों के कारण बाल विवाह व पर्दा प्रथा आरम्भ हो गई थी। ऋषि दयानन्द ने अध्ययन कर पाया कि यह सभी अन्धविश्वास हैं। वेदों से इनका समर्थन नहीं होता। उन्होंने अध्ययन से यह भी पाया कि वेद ही स्वतः प्रमाण धर्म व संस्कृति सहित ज्ञान विज्ञान के ग्रन्थ हैं। उन्होंने अज्ञान व अन्धविश्वासों का खण्डन और वैदिक सत्य मान्यताओं का मण्डन प्रमाणों व युक्तियों आदि से किया। वह देश भर में घूमे और सर्वत्र वैदिक सत्य मान्यताओं का प्रचार किया। लोग मूर्तिपूजा और अन्य अन्धविश्वासों को छोड़ने लगे और अज्ञान व अविद्या सहित कुप्रथाओं से मुक्त एक नया भारत अस्तित्व में आने लगा। इसके साथ ही ऋषि दयानन्द ने अज्ञान व अविद्या को दूर करने के लिए 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की रचना की। ऋषि दयानन्द ने देश की गुलामी व उसके कुपरिणामों को गहराई से देखा व अनुभव किया था। उन्होंने देश की आजादी का समर्थन किया। उनके प्रायः सभी ग्रन्थों सहित वेदभाष्य में प्रकट विचारों से देश की आजादी का समर्थन होता है। सत्यार्थप्रकाश के दो संस्करण प्रकाशित हुए। पहला सन् १८७४ में तैयार हुआ। दूसरा उन्होंने सन्

नारी - सशक्तीकरण

-शशि शेखर झा

गुप्त जी ने यशोधरा के संदर्भ में नारी को अबला की संज्ञा देकर जिस सामाजिक अवधारणा की व्यंजना की है, उसकी पृष्ठभूमि मध्यकालीन लोकजीवन में क्रमशः अपदस्थ होती नारी की दशा में सुरक्षित है। वैदिक संस्कृति में नारी के श्रेष्ठतम गरिमामय स्वरूप के दर्शन होते हैं। वहाँ ममता, करूणा और त्याग की प्रतिमूर्ति नारी के चतुर्दिक समस्त पुरुष सत्ता परिभ्रमण करती हुई उसे शक्ति-स्वरूपा देवी के विभिन्न रूपों में पूजती दिखती है। शैव-दर्शन भी इस बात की स्वीकृति देता है कि शिव में शिवत्व की स्थापना आदिशक्ति नारी ही करती है। जीवन और प्राणों का पोषण-संवर्धन करने वाली प्रकृति को भी नारी रूप में ही पूज्या माना गया है। नारी में प्रकृति के स्वरूप की व्यंजना उसके सहज दैवीय गुणों के कारण ही की गई है। किन्तु, यदाकदा, प्रकृति श्रुब्ध-कुदध होकर विध्वंसक रूप अख्तियार कर लेती है। उसी प्रकार नारी भी अमानवीय और पैशाची प्रवृत्तियों के विरूद्ध संहार को आतुर रणचंडी दुर्गा और काली की प्रचंडता धारण कर लेती है जिसके समक्ष समस्त देवगण नतमस्तक हो जाते हैं।

किन्तु, पुरूष की क्षुद्र भोगवादी प्रवृत्ति उसे नारी के अलौकिक रूपरूप की उपेक्षा कर मांसल सौदर्य के उपबोग्य की ओर उकसाती है तो इतिहास कलंकित हो उठता है। नारी के पूज्या से भोग्या बनाने वाले रावणों से आज हमारा समाज आक्रांत है। आज सीताओं के शीलहरण और द्रौपदियों के चीरहरण की अगणित घटनाएं रोजमर्रा का विषय बन गई हैं। इन अपराधिक व अमानवीय दुर्वृत्तियों के शमनार्थ सरकार ने दंड-विधान के द्वारा नारी-सुरक्षा की पहल की है। बावजूद इसके आपराधिक घटनाओं में कभी नजर नहीं आती।

मध्यकालीन राजाओं, सामंतों एवं राजश्रित उच्चवर्गीय लोगों की विलासितापूर्ण भोगवादी जीवन-दृष्टि ने नारी की सांस्कृतिक मर्यादा को जो करारी चोट पहुँचाई, उसका दंश आधुनिक जीवन में भी विद्यमान है। नारी को अबला से सबला बनाने के सरकार के सारे प्रयास एक तरफ हैं और दूसरी लोगों की उद्दाम भौतिक भोगवादी प्रवृत्ति। पंतजी ने नारी के इसी युग-सापेक्ष सत्य को उकेरा है :-

योनि मात्र रह गई मानवी निज आत्मा कर अर्पण।
पुरूष प्रकृति की पशुता का पहने नैतिक आभूषण ॥

वस्तुतः पुरुष ने नारी को उपभोग की एक सामग्री के रूप में स्वयं के लिए सुरक्षित करने के निमित्त तरह-तरह के नैतिक एवं सामाजिक बैड़ियों से जकड़कर उसे ऐसा बना डाला कि वह शक्तिस्वरूपा जगत्विधात्री का प्रतिरूप है।

किन्तु, स्वतन्त्रता के पश्चात् जीवन के सभी क्षेत्रों में एक नई चेतना, एक नई दृष्टि और एक नये सकारात्मक परिवर्तन की लहर व्याप्त हुई। नारी-विषयक तमाम सामाजिक व नैतिक मानदंडों पर पुनर्विचार और उनके पुनर्मूल्यांकन की दिशा में प्रयास शुरू हुए। नारी को सतीप्रथा और बाल-विवाह को अभिश्पत काश से विमुक्त कर राजा राममोहन राय ने जिस नव उन्मेष की दिशा प्रदान की थी, उसके परिणामस्वरूप भारतेन्दु राय ने जिस नव उन्मेष की दिशा प्रदान की थी, उसके परिणामस्वरूप भारतेन्दु और द्विवेदी जी तक आते-आते नारी-जीवन के कलेवर में सार्थक परिवर्तन नजर आने लगा था। अब नारी के सहअस्तित्वपरक मान्यताओं को बल मिलने लगा था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में गाँधीजी के आह्वान पर अग्रसर होनेवाली नारियों की भूमिका रानी लक्ष्मीबाई ने पूर्व में ही निर्धारित कर दी थी और गाँधी ने तो स्पष्ट घोषणा कर दी कि नारी शक्ति का सहयोग जब तक प्राप्त नहीं होता तब तक स्वतन्त्रता के सारे संघर्ष अधूरे और एकांगी होंगे। समाज में नारी को उचित सम्मान प्राप्त कर सिर उठकर जीने का अधिकार शिक्षा, सम्पत्ति, स्वतन्त्रतापूर्वक, आवागमन आदि के तमाम वैधानिक अधिकार प्रदान कर उसे एक सहज-स्वाभाविक मानवीय जीवन जीने की दिशा में जो उदारतापूर्ण दृष्टि अपनायी है, वह नारी के प्राचीन सामाजिक मूल्य की पुनस्थापना के ही प्रयास हैं। परिणामस्वरूप आज साहित्य होया कला-कौशल, विज्ञान हो या व्यापार-विनिमय, संचार हो या उद्योग-प्रौद्योगिकी, राजनीति हो या खेल, समाज-सेवा हो या नृविज्ञान-सर्वत्र महिलाओं ने राष्ट्र-निर्माण और विकास की दिशा में अपनी सफल भूमिका का सहज-बौध कराया है। आज नारी पुरुष की वैशाखी का मुँहताज नहीं ही परवरिश के लिए किसी अन्य पर निर्भर है। आज उसने परवशता और दासत्व का रूढ़िग्रस्त पारंपरिक केचुल उतारकर आत्मनिर्भरता का सहज-स्वाभाविक स्वरूप अख्यितार करने की दिशा में अग्रसर दिखाती है जो स्वागत योग्य है।

किन्तु, तमाम वैधानिक स्वीकृतियों के सहयोग से नारी के विकास का जो परिदृश्य सामने आया है, वह पर्याप्त नहीं है। आज भी उसे सामाजिक व नैतिक मूल्य प्राप्त करने की अपेक्षा बरकरांर है। आप भी हमारा पुरुष-प्रधान समाज नारी को अपने भोगवादी कठघरे से बाहर आजाद करने में कहीं न कहीं अपनी संकीर्णता बरतता दिखाई देता है। यह न सिर्फ नारी के विकास में बाधा है, बल्कि एक समुन्नत राष्ट्र के निर्माण में भी अड़चन पैदा करता है। आज अवश्यकता है नारी सशक्तीकरण की तमाम वैधानिक स्वीकृतियों को सामाजिक व नैतिक स्वीकृति बनाने की, अपनी सोच को परिष्कृत और व्यापक आयाम देने की। आईए ! हम सब मिलकर अबला को सबला बनाने और भोग्य को योग्या बनाने की दिशा में अपनी भूमिका को सार्थक आयाम दें।

నీటి యుద్ధాల కాలం రాబోతోంది

భవిష్యత్తులో యుద్ధాలు నీటి కోసం జరుగుతాయని, మూడవ ప్రపంచయుద్ధం నీటికోసమే జరగొచ్చని చాలామంది నిపుణులు హెచ్చరించారు. అనేక నదులు ప్రవహించే భారతదేశంలో నీటికి కరువొస్తుందా? గుక్కెడు తాగు నీటి కోసం మైళ్ళకొద్దీ నడిచే గ్రామీణ ప్రాంతాలు నేటికి కూడా ఉన్నాయన్నది మరిచిపోరాదు. నీటివనరులు దేశంలో పుష్కలంగా ఉన్నప్పటికీ వాటర్ మేనేజిమెంట్ అనేది కనబడదు. జలసంపద అమూల్యమైనది. దాని విలువను భారత ప్రభుత్వాలు గుర్తించినట్లు కనబడడం లేదు. దేశంలో దాదాపు అరవై కోట్ల మంది ప్రజలు నీటి అవసరాల కోసం కేవలం రుతుపవనాలపై ఆధారపడే పరిస్థితి ఉంది. వానరాకడ ఎప్పుడో చెప్పలేని పరిస్థితి. రుతుపవనాలు ఆలస్యమైతే నీటి కష్టాలు ప్రారంభమవుతాయి. అయినా నీటివనరుల నిర్వహణ విషయంలో ప్రభుత్వాలు శ్రద్ధ చూపడం లేదు. రుతుపవనాల విషయంలో ఖచ్చితంగా చెప్పడం ఎన్నడూ సాధ్యం కాదు. గ్లోబల్ వార్మింగ్ వల్ల ప్రపంచవ్యాప్తంగా వాతావరణ పరిస్థితులు మారిపోతున్నాయి.

ప్రపంచంలో అనేక ప్రాంతాల్లో నీటి ఎద్దడి గురించి వార్తలు చదువుతున్నాం. కొన్ని నగరాల్లో ప్రభుత్వాలు నీటి సరఫరాకు రేషన్ విధించింది. దక్షిణాఫ్రికాలో రోజుకు పాతిక లీటర్ల రేషను లెక్కన ప్రజలకు నీటిని అందిస్తున్న వార్తలు కూడా చదివాం. ఇంకా అనేక ప్రాంతాల్లో నీటిఎద్దడి గురించిన వార్తలు వస్తూనే ఉన్నాయి. మైళ్ళ దూరం నుంచి ట్రక్కుల్లో, వాటర్ ట్యాంకర్లలో నీటిని సరఫరా చేస్తున్న పరిస్థితులున్నాయి. మన దేశంలోను కొన్ని ప్రాంతాల్లో ఇలాంటి పరిస్థితులున్నాయి. దూరప్రాంతాల నుంచి నీటిని సరఫరా చేయవలసి వస్తోంది. ప్రపంచ జనాభాలో ఆరవభాగం జనాభా మనదేశంలోనే ఉంది.

కాని ప్రపంచంలోని భూభాగంలో కేవలం 2.4 శాతం నేల మాత్రమే భౌగోళికంగా మనవద్ద ఉంది. ప్రపంచంలోని తాగునీటిలో కేవలం 4 శాతం మాత్రమే మనకు అందుబాటులో ఉంది. దీన్ని బట్టి దేశంలో జనాభాకు అవసరమైనంత తాగు నీటి నిల్వలు ఉన్నాయో లేదో అర్థం చేసుకోవచ్చు. దేశంలో దాదాపు సగం జనాభా నీటి ఎద్దడిని ఎదుర్కుంటుంది. దేశంలో నివసిస్తున్న 120 కోట్ల మంది ప్రజల్లో 74 కోట్ల 20 లక్షల మంది కేవలం వ్యవసాయం ప్రధానంగా ఉన్న గ్రామీణ ప్రాంతాల్లో నివసిస్తున్నారు. రుతుపవనాల వల్ల కురిసే వర్షాలే భూగర్భజలాలకు కూడా ఆధారం. వర్షాల వల్లనే 68 శాతం భూగర్భంలో నీటినిల్వలు చేరుతున్నాయి. కాలువలు, సాగునీరు, చెరువులు వగైరాల నుంచి భూమిలోకి నీరు ఇంకడం వల్ల భూగర్భంలో నీరు చేరడం అన్నది కేవలం 32 శాతమేనని తెలుస్తోంది.

దేశ జనాభాను దృష్టిలో ఉంచుకుంటే భారతదేశంలో నీటి నిర్వహణ అన్నది చాలా లోపాలతో కూడుకున్నది. నీటి సమస్య విషయంలో దీర్ఘకాలిక పరిష్కారాల కోసం ప్రభుత్వాలు పనిచేయడం లేదు. ఏదన్నా సమస్య వచ్చినప్పుడు తాత్కాలిక ఉపశమనాలతో చేతులు దులుపుకుంటున్నాయి. నీటి వనరులను సమర్థవంతంగా నిర్వహించడానికి వ్యవసాయరంగం, పారిశ్రామికరంగం, నగరాల్లో వాటర్ వర్క్ అందరూ కలిసి సమన్వయంతో వ్యవహరించవలసి ఉంటుంది. మరో ముఖ్యమైన విషయమేమంటే మనం రోజువారి నీటి వాడకంలో చాలా నీటిని వ్యర్థం చేస్తాం. ఇలా వ్యర్థమయ్యే నీరు 40 నుంచి 60 శాతం వరకు ఉంటుందని అంచనా. చాలా దేశాల్లో ఇలా నీటిని వ్యర్థంగా వాడడం జరగదు. నిజానికి భారతదేశం నీటివనరులు పుష్కలంగా ఉన్న దేశం. చాలా పెద్దపెద్ద నదులు ఇక్కడ ఉన్నాయి. ఏటా సగటున 1170 మిల్లీమీటర్ల వర్షం కురుస్తుంది. ఏటా రిన్యూవబుల్ వాటర్ రిజర్వులు 1608 బిలియన్ క్యూబిక్ మీటర్లు.

ప్రపంచంలో తాగునీటి రిజర్వుల్లో దాదాపు తొమ్మిదో వంతు ఇక్కడే ఉన్నాయి. భారతదేశంలో నీటిఎద్దడికి ముఖ్యమైన కారణం కేవలం నిర్వహణ లోపమే. దేశంలో చాలా భాగాల్లో పుష్కలంగా వానలు కురుస్తుంటాయి. విచిత్రమేమంటే దేశంలో వరదలకు గురయ్యే ప్రాంతాల్లోనే ఆ తర్వాత నీటి ఎద్దడి కూడా ఉంటుంది. దేశంలో చిన్నా పెద్ద 4525 డ్యాములున్నాయి. అయినా దేశంలో తలసరి నీటి నిల్వ కేవలం 213 క్యూబిక్ మీటర్లు మాత్రమే. రష్యాలో ఇది 6,103 క్యూబిక్ మీటర్లు, ఆస్ట్రేలియాలో 4,733 క్యూబిక్ మీటర్లు, చైనాలో 1111 క్యూబిక్ మీటర్లు. అంటే మన ప్రభుత్వాలు అఫ్ సీజను కోసం నీటినిల్వలకు సరయిన ఏర్పాట్లు చేయనే లేదని చెప్పాలి. నీటి నిర్వహణ విషయంలో ఇస్రాయిల్ చాలా ప్రగతి సాధించింది. డ్రిప్ ఇరిగేషన్, వ్యర్థజలాలను సాగుకు వాడడం, ఇండ్లల్లో ఉపయోగించిన నీటిలో 80% శుద్ధి చేసి వ్యవసాయానికి వాడడం జరుగుతోంది. అక్కడ సాగునీటిలో దాదాపు 50% ఇలా శుద్ధిచేసిన జలా లే.

ఆసియన్ డెవలప్మెంట్ బ్యాంకు ప్రకారం 2030 నాటికి భారతదేశం 50 శాతం నీటికరువును ఎదుర్కోబోతోంది. ప్రభుత్వ లెక్కల ప్రకారం ఏటా మనకు 1100 బిలియన్ క్యూబిక్ మీటర్లు అవసరం. 2025 నాటికి 1200 బిలియన్ క్యూబిక్ మీటర్లు అవసరమవుతాయి. 1951 లెక్కల ప్రకారం దేశంలో సగటున ప్రతి మనిషికి ఏటా 5200 క్యూబిక్ మీటర్ల నీళ్ళు లభించేవి. అప్పుడు జనాభా 35 కోట్లు మాత్రమే. 2010 నాటికి జనాభా చాలా పెరిగింది. సగటున ప్రతి మనిషికి ఏటా లభించే నీళ్ళు 1600క్యూబిక్ మీటర్లకు తగ్గిపోయాయి. అంతర్జాతీయ ప్రమాణాల ప్రకారం చూస్తే ఇది నీటి ఎద్దడిగానే భావించాలి. ప్రస్తుతం 2018లో దేశంలో సగటున ప్రతిఒక్కరికి 1400 క్యూబిక్ మీటర్లు మాత్రమే లభిస్తున్నాయి. రాబోయే ఒకటి రెండు దశాబ్దాల్లో ఇది సగటును 1000 క్యూబిక్ మీటర్లకు పడిపోవచ్చన్న అనుమానాలున్నాయి. మరో ముఖ్యమైన విషయమేమంటే లభిస్తున్న నీటిలో చాలా భాగం వాడకానికి పనికివచ్చేది కాదని నేషనల్ ఇనిస్టిట్యూట్ అఫ్ హైడ్రాలజీ చెబుతోంది. ప్రస్తుతం సగటున ప్రతిఒక్కరికి కేవలం 938 క్యూబిక్ మీటర్ల నీరు మాత్రమే వాడకానికి తగినది దొరుకుతోందని తెలుస్తోంది. భూమిపై నీటిలో కేవలం 2.5% నీరు మాత్ర మే మంచినీరు. జలం జీవాధారం. అందుకే ఐక్యరాజ్యసమితి 2010 జులై 28వ తేదీన నీటిని పొందడం మానవహక్కుగా తీర్మానించింది. సిటీబ్యాంక్ చీఫ్ ఎకనమిస్ట్ విలియం బీటర్ నీటి ప్రాముఖ్యం గురించి రాస్తూ రానున్న కాలంలో చమురు, విలువైన లోహాల కన్నా నీరు విలువైందిగా మారిపోతుందన్నాడు. ప్రపంచంలో పర్యావరణ

వివక్షలపై విజయధ్వజం

-కృపాకర్ మాదిగ

భారతీయ దళిత వర్గాల పెన్నిధి, పరిపాలనాదక్షుడు డాక్టర్ బాబూ జగ్జీవన్‌రామ్ జీవితాన్ని ఆయన జయంతి సందర్భంగా స్మరించుకుందాం.

జగ్జీవన్‌రామ్ బీహార్‌లోని ఆరా పట్టణానికి దగ్గర ఉన్న చాంద్వ గ్రామంలో 1908 ఏప్రిల్ 5న జన్మించారు. బసంతిదేవి, శోభిరాం జగ్జీవన్‌రామ్ తల్లిదండ్రులు. జగ్జీవన్‌రామ్ స్కూలుకు వెళ్ళేనాటికి చర్మకారులు పాకీ వృత్తివారు మొదలగు దళిత కులాల ప్రజలు దుర్భరమైన అంటరానితనం, బానిసత్వం కోరల్లో నలిగి పోతుండేవారు. గ్రామ వీధుల్లో, సవర్ణుల ఇళ్ళ మధ్య, పురవీధుల్లో చర్మకారులు నడవడానికి ఆంక్షలుండేవి. చెప్పులు వేసుకునో, తలపాగా చుట్టుకునో, గొడుగు పెట్టుకునో చర్మకారులు సవర్ణ హిందువుల వీధుల్లో అసలే తిరగరాదట ! మంచి నీటి బావులు, చెరువుల వద్ద సవర్ణులు చర్మకారులను రానిచ్చే వారు కారు. చర్మకారులు, పాకీవారు, ఇతర దళిత కులాల వారు తమ మల మూత్రాలు ఎత్తిపోయటానికి, తమకి బానిసత్వం చేయటానికి ఉన్నారన్న తప్పుడు నమ్మకాల్లో ఆ రోజుల్లో అగ్రకులాల వారుండేవారు.

జగ్జీవన్‌రామ్ చదువుకుంటున్న ఆరా పట్టణం స్కూల్లో అగ్రకుల హిందువులకు, ముస్లింలకు వేరు వేరు మంచినీటి కుండలుండేవి. దాహంతో ఉన్న జగ్జీవన్‌రామ్ ఒక రోజు అగ్రకుల హిందువుల కుండలోని మంచి నీళ్ళు తీసుకుని తాగాడు. ఇది చూసిన అగ్రకులాల విద్యార్థులు "చర్మకారుడైన జగ్జీవన్‌రామ్ ముట్టుకున్న కుండని మేం ముట్టుకోం" అని స్కూలు కుండలో మంచి నీటిని తాగటం మానేశారు. దీనితో హెడ్మాష్టర్ అగ్రకుల విద్యార్థులకు, దళిత విద్యార్థులకు వేరు వేరు మంచినీటి కుండలను పెట్టించారు. ఇది చూసిన జగ్జీవన్‌రామ్ హిందువుల కంటె, ముస్లిముల కంటె, తన దళితుల సాంఘిక స్థాయి ఇంత హీనమైనదా? అని కలత చెందాడు. ఆగ్రహించాడు. ఎవరూ చూడకుండా కుండలను తానే పగలగొట్టి, ఎవరో పగలగొడుతున్నారని ఫిర్యాదు చేసేవాడు. మళ్ళీ కొత్త కుండలను పెట్టేవారు. జగ్జీవన్ మళ్ళీ పగలగొట్టేవాడు. చివరికి జగ్జీవన్‌రామ్ అభిమతాన్ని గమనించిన హెడ్‌మాష్టర్ ఇకపై విద్యార్థులందరికీ స్కూల్లో ఒకే కుండ ఉండే విధంగా చర్య తీసుకున్నాడు. దీంతో జగ్జీవన్ శాంతించాడు. వివక్షలపై జగ్జీవన్‌రామ్ భావి పోరాటాలకు స్కూల్లోనే పునాదులు పడ్డాయి.

జగ్జీవన్‌రామ్ ఆర్య సమాజం వారి విద్యార్థి వసతి గృహంలో భోజనం చేస్తూ కాలేజీకి వెళ్లేవాడు. జీవన్ కులం తెలుసుకున్న వంటవారు అతని పాత్రలు కడగటం మానేశారు. జగ్జీవన్‌రావ్ హాస్టల్లో ఉన్నంతవరకు ఏ ఒక్క దళితేతర పనివారు అంట్లుతోమే పనిలో చేరలేదు. ఒక అధ్యపకుని ఆహ్వానం మేరకు జగ్జీవన్‌రామ్ నాలుగు రోజులు అతని ఇంట్లో భోజనం చేశాడు.

1946లో నెహ్రూ ప్రధానిగా ఏర్పడి తాత్కాలిక మొదటి మంత్రి మండలిలో జగ్జీవన్‌రామ్ కార్మిక శాఖ మంత్రిగా చేరారు. మంత్రులందరిలోకెల్లా చిన్న వయసు వాడైనందున అందరూ బాబూజీని "బేబీ మినిస్టర్" అని పిలిచేవారు. అప్పటి నుండి 29 సంవత్సరాలు కేంద్ర మంత్రిగా, ఉప ప్రధాన మంత్రిగా, సెంట్రల్ పార్లమెంట్ బోర్డు సభ్యునిగా, ఏఐసిసి అధ్యక్షునిగా, ఇంకా అనేక కీలక పదవులను జగ్జీవన్‌రామ్ దక్షతతో నిర్వహించారు.

నాలుగోరోజు జగ్జీవన్‌రామ్ చర్మకారుడని తెలిసిన నౌకర్లు ఆ అధ్యాపకుని ఇంట్లో పని మానేశారు. తర్వాత ఆసీఘాట్‌లో ఒక శూద్రుని ఇంటిని జగ్జీవన్‌రామ్ అద్దెకు తీసుకున్నాడు. మరుసటిరోజు ఇంట్లో చేరటానికి సామానులతో వెళ్ళగా, ఆ ఇంటి యజమాని అడ్వాన్సు డబ్బుతో జగ్జీవన్‌కి ఎదురొచ్చాడు. తానొక పూజారి వద్ద నౌకర్ని అని, చర్మకారులైన మీకు ఇల్లు అదెద్దకిచ్చిన సంగతి పూజారికి తెలిస్తే తన ఉద్యోగం ఊడుతుందని గనక అడ్వాన్సు డబ్బు వెనక్కి తీసుకుని వెళ్ళమని జగ్జీవన్‌ని కోరాడు. చాలా అవమానంగా భావించిన జగ్జీవన్ "అడ్వాన్సు పుచ్చుకున్నావు. ఇంటి తాళాలు కూడా ఇచ్చావు. ఇప్పుడు వొద్దంటున్నావు. ఏం చేసుకుంటావో చేసుకో. నేను ఇక్కణ్నించి కదలను" అంటూ సామానుతో సహా అద్దె ఇంట్లోకి ప్రవేశించాడు. కొద్ది రోజులు ఇంటి యజమాని, జగ్జీవన్‌రామ్ ఎడమొహం పెడమొహంగా ఉన్నప్పటికీ, త్వరలోనే వారిద్దరి మధ్య స్నేహపూర్వక సంబంధ మేర్పడింది. బాబూజీ చిన్ననాటి నుండే వివక్షలపై తిరుగుబాటు చేశాడనేదానికి ఈ సంఘటనలు కొన్ని మచ్చుతునకలు.

జీవన్‌రామ్‌కు ఎనిమిదో ఏటనే పెళ్ళి జరిగింది. భార్య కొద్ది కాలానికే (1933) చనిపోయింది. తిరిగి 1935లో డాక్టర్ బీర్‌బల్ కుమార్తె ఇంద్రాణిదేవితో పెళ్ళి జరిగింది. వీరికి సురేష్ కుమార్, మీరా అను ఇద్దరు సంతానం కలిగారు.

సంత్ రవిదాస్ సమ్మేళనాలు నిర్వహించి ఒకవైపు దళితులను సంఘటితం చేస్తూనే, దేశ స్వాతంత్ర్య సముపార్జన కోసం మరో వైపు స్వరాజ్య ఉద్యమాల్లో పాల్గొంటున్న జగ్జీవన్‌రామ్ 1930లో గాంధీ దృష్టిలో పడ్డాడు. 1935లో కాన్పూర్‌లో జరిగిన ఆలిండియా డిప్రెస్డ్ క్లాసెస్ లీగ్ (అఖిల భారత దళిత వర్గాల సంఘం) మహాసభలకు జగ్జీవన్‌రామ్ అధ్యక్షత వహించగా, ఈ మహాసభలను గాంధీ ప్రారంభించటం విశేషం. డిప్రెస్డ్ క్లాసెస్ లీగ్‌కు 1936 నుండి 1942 వరకు బాబూజీ అధ్యక్షత వహించారు. 1935లో జగ్జీవన్‌రామ్ బిహార్ శాసన మండలికి నామినేట్ అయ్యారు. అదే సంవత్సరం బిహారు శాసన సభకు జరిగిన ఎన్నికల్లో మొత్తం 15 నియోజక వర్గాలకు 15 మంది 'లీగ్' అభ్యర్థులూ గెలిచారు. వీరిలో 14 మంది ఏకగ్రీవంగా ఎన్నిక కావడం మరో విశేషం. 1942 ఆగస్టు 7న ప్రారంభమైన 'క్విట్ ఇండియా' ఉద్యమంలో పాల్గొన్నందుకు జగ్జీవన్‌రావ్ జైలుకు వెళ్ళవలసి వచ్చింది. 1943లో జగ్జీవన్‌రామ్ జైలు నుంచి విడుదలయ్యాడు. దేశవ్యాపిత విస్తృత పర్యటనలు చేసి, సభలు, సమావేశాలు నిర్వహించి దళిత వర్గాల్లో సంఘటిత చైతన్యం తీసుకురావటానికి జగ్జీవన్‌రామ్ చాలా కృషి సల్పారు. 1946లో నెహ్రూ ప్రధానిగా ఏర్పడిన తాత్కాలిక మొదటి మంత్రి మండలిలో జగ్జీవన్‌రామ్ కార్మిక శాఖ మంత్రిగా చేరారు. మంత్రులందిరిలోకెల్లా

చిన్న వయసు వాడైనందున అందరూ బాబూజీని "బేబీ మినిస్టర్" అని పిలిచేవారు. అప్పటి నుండి 29 సంవత్సరాలు కేంద్ర మంత్రిగా, ఉప ప్రధాన మంత్రిగా, సెంట్రల్ పార్లమెంట్ బోర్డు సభ్యునిగా, ఏఐసిసి అధ్యక్షునిగా, ఇంకా అనేక కీలక పదవులను జగ్జీవన్‌రామ్ దక్షతతో నిర్వహించారు. బ్రిటీష్ కేబినెట్ మిషన్ బాబూజీని ఆహ్వానించింది. 1947లో బాబూజీ రాజ్యాంగ పరిషత్తుకు ఎన్నికైనారు. ఇదే సంవత్సరం ఐక్యరాజ్య సమితి అంతర్జాతీయ కార్మిక మహాసభకు అధ్యక్షులుగా బాబూజీ ఎన్నికయ్యారు. కేంద్ర కార్మిక శాఖ, వ్యవసాయం, ఆహారం, ఉపాధి, పునరావాసం, రవాణా, రక్షణ, తంతితపాల, రైల్వే, సమాచార మొదలగు శాఖలన్నింటిని మూడు దశాబ్దాలు ప్రజ్ఞా పాటవాలతో, బాధ్యతతో బాబూజీ నిర్వహించారు.

ఇందిరాగాంధీ నియంతృత్వ ధోరణితో విసిగిపోయిన జగ్జీవన్ కాంగ్రెస్ నుండి విడిపోయి 'కాంగెస్ ఫర్ డెమోక్రసి' అనే పార్టీని స్థాపించారు. తర్వాత ఇది జనతా పార్టిలో విలీనమయ్యింది. 1977లో మొరార్జీ ప్రధాన మంత్రిగా జనతా పార్టీ ఏర్పాటు చేసిన ప్రభుత్వంలో జగ్జీవన్‌రామ్ మంత్రిగా, ఉప ప్రధాన మంత్రిగా 1979 వరకు కొనసాగారు. అంత:కలహాల కారణంగా జనతా ప్రభుత్వం పడిపోయింది. 1980లో బాబూజీ కాంగ్రెస్ (జె) పేరుతో పార్టీని స్థాపించారు. మన రాష్ట్రానికి చెందిన మాజీ మంత్రి, డిప్యూటీ స్పీకర్ కీ॥ శే॥ శ్రీమతి సదాలక్ష్మి ముదిగొండ ఈశ్వరయ్య మొదలగు దళిత నాయకులకు బాబూజీ అండగా ఉన్నారు. 1985లో దేశ ప్రజలు బాబూజీ జన్మదినోత్సవాన్ని "సమతా దివస్"గా జరుపుకున్నారు. 1986 జూలై 6న మహాపరి నిర్వాణం చెందిన బాబూజీ కోసం కేంద్ర ప్రభుత్వం దేశమంతటా 3 రోజులు సంతాప దినాలు ప్రకటించింది. సాహసి, మేధావి, ఉద్యమకారుడు, పరిపాలనాదక్షుడు, విజేత అయిన బాబూజీ జీవితం ఒక గొప్ప విజయగాథ, ఆ స్ఫూర్తిదాయక గాథను ప్రభుత్వం పాఠ్యాంశంగా ప్రవేశపెట్టాలి. ఆ మహా నాయకుడిని ఇప్పటికైనా 'భారతరత్న'గా గౌరవించుకోవాలి.

మార్పుకు గురయ్యే అవకాశాలు అధికంగా ఉన్న దేశాల్లో భారతదేశం కూడా ఒకటి. చాలా దేశాలు క్లయిమేట్ ఛేంజ్ తట్టుకోడానికి సంసిద్ధమవుతున్నాయి. కాని మనం అలాంటి ప్రయత్నాలే చేస్తున్నట్లు కనబడడం లేదు. గ్రామీణ ప్రాంతాల్లో వ్యవసాయానికి, పశువులకు నీటి ఎద్దడి సమస్య, బిందెడు నీళ్ళ కోసం మైళ్ళ కొద్ది నడుస్తున్న మహిళలు, మరోవైపు పవర్ ప్లాంట్లకు తరలిపోతున్న నీరు వీటన్నింటి గురించి ఆలోచించేది ఎవరు? కొన్ని ప్రాంతాల్లో నేల, నీరు చవగ్గా పరిశ్రమలకు కట్టబెడుతున్న ప్రభుత్వాలు పునరాలోచంచ వలసిన అవసరం ఉంది. వర్షపాతం వల్ల లభించే నీటిలో 35% మాత్ర మే నేడు ఉపయోగానికి వస్తుందన్న లెక్కలున్నాయి. వర్షపునీటిని నిల్వ ఉంచడానికి ఉపయోగపడే చెరువులు, కుంటలను పునరుద్ధరించడం, సాంప్రదాయిక జలపరిరక్షణ విధానాలను ప్రోత్సహించడం, ప్రజలను కూడా నీటి నిర్వహణలో భాగస్వాములు చేయడం చాలా అవసరం.

బాలబాలికల వైదిక ప్రశిక్షణ వేసవి శిబిరములు

ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సౌజన్యంతో జంటనగరాల ఆర్య సమాజములు మరియు విద్యాలయములలో రోజుకు రెండు గంటల వ్యవధిగల వైదిక ప్రశిక్షణ వేసవి శిబిరములను తేది మే 1 నుండి 13, 2018 వరకు నిర్వహించ నిశ్చయమైనది. జంట నగరాల ఆర్య బంధువులతో మనవి ఏమనగా తమతమ ప్రాంతములలో నడుచు శిబిరములకు తమ సంతానముతో పాటుగా ఇతర బాలబాలికలను కూడా ప్రోత్సహించి పంప గలరు. ఈ శిబిరములకు సహకరించి జయప్రదము చేయగలరని విజ్ఞప్తి.

సమాపన సమారోహము ఆదివారము తేది 13-5-2018 రోజున ఉదయం 9.00 గంటల నుండి పండిత్ నరేంద్ర భవనము, రాజమొహల్లా యందు నిర్వహించబడును.

సంప్రదించవలసిన ఫోన్ నెంబర్లు
విజయేందర్-9247131100,
హరికిషన్ వేదాలంకార్-9703066001
అరవింద్ శాస్త్రి-9391158354,
పండిత్ విశ్వశ్రవ-8099333754
అరవింద్ కుమార్-9989623524

కిషోర చరిత్ర నిర్మాణ శిబిరము

తేది ఏప్రిల్ 20 నుండి 1 మే 2018 వరకు

ఆచార్య అరుణ్ కుమార్ గారి నేతృత్వంలో ఋషిసేన సౌజన్యంతో తేది 20 ఏప్రిల్ నుండి 1 వే 2018 బాలకుల చరిత్ర నిర్మాణ శిబిరము కేశవ మెమోరియల్ పాఠశాల, నారాయణగూడ, హైదరాబాద్‌లో నిర్వహించ బడును. శిబిర శుల్కము ప్రతి విద్యార్థికి రూ॥ 1,500/-లు నిర్ణయించ నైనది. ఈ శిబిరమున పాల్గొను బాలకులు ఈ ఫోన్ నెంబర్లను 8555839497, 9848632127 సంప్రదించగలరు.

ఆర్యవీర్‌దల్ ప్రశిక్షణ శిబిరము

ఆర్య సమాజము జంగంపల్లి, మం॥ బిక్నూర్, నిజామాబాద్ జిల్లా వారి ఆధ్వర్యంలో ఆర్యవీర్‌దల్ 8వ ప్రశిక్షణ శిబిరము తేది 20-4-2018 నుండి తేది 29-04-2018 వరకు ఆర్య సమాజము జంగంపల్లి ప్రాంగణములో నిర్వహించబడును. కావున తల్లిదండ్రులు తమ పిల్లల నైతిక విలువలను పెంపొందించుటకై జంగంపల్లి ఆర్య సమాజ అధికారులను సంప్రదించగలరు.

అధ్యక్షులు	కార్యదర్శి
శ్రీ చెన్నప్పగారి రాంరెడ్డి	శ్రీ గంగిమాణిక్యం
9912766235	9704336486

బాలబాలికల సదాచార ప్రశిక్షణ శిబిరము (ఆవాస శిబిరము)

ఆర్య సమాజము ఇందూరు (నిజామా బాద్) తెలంగాణ ఆధ్వర్యములో తేది 4-5-2018 నుండి 13-5-2018 వరకు దశదిన శిబిరము ఉండును వయస్సు 6 నుండి 10వ తరగతి విద్యార్థులతో పాటు ఈ అవకాశమును అందరు తప్పక సద్వినియోగం చేసుకొనగలరు. వివరాలకై 9441250111, 9848853383 ఫోన్ నెంబర్లకి సంప్రదించగలరు.

'అహింసా సత్యాస్తేయ బ్రహ్మచార్యా పరిగ్రహా యమాః'

-డా॥ కోడూరి సుబ్బారావు

అట్టి ఋతంభరా ప్రజ్ఞను వేదం 'ప్రథమజా ఋతస్య' - ప్రకృతి నుండి ముందుగా పుట్టిన మహతత్త్వబుద్ధి యంటుంది. దానిని పొంద పూర్ణపురుషార్థం చెయ్యమంటుంది.

న విజానామి యది వేదమస్మి
నిణ్యః సన్నద్ధో మనసా చరామి ।
యదా మాగన్ ప్రథమజా ఋతస్య
ఆదిద్వాచో అశ్నువే భాగమస్యాః ॥

ఋ. 1-164-37, అథర్వ 9-10-16

నే నిదియేనా - ఈ శరీరమేనా ? లేక జీవాత్మనా ? లేక మరేమైనానా ? తెలియ కున్నాను. మనస్సుతో బాగుగా బంధింపబడి సంశ్యముతో తిరుగుచున్నాను. ఒకవేళ నాకు ఋతమునుండి (ప్రకృతినుండి) మొదటగా పుట్టిన మహతత్త్వబుద్ధి లభిస్తే నా ఈ శాబ్దిక జ్ఞానం అనుభవమౌతుంది కదా !

ఉపస్థాయ ప్రథమజామృతస్య
ఆత్మనాత్మాన మభి సంవివేశ ॥యజు.32-11

ఋతముయొక్క (ప్రకృతి యొక్క) మొదటి పరిణామముగా ఏర్పడిన మహతత్వబుద్ధి నాశ్రయించి జీవుడు పరమాత్మను పొందుచున్నాడు.

ఆ స్థితిని అందుకోవటంకొరకే గాయత్రీ జపం చేస్తూ బుద్ధిలో పరమేశ్వరుని భర్గః స్వరూపాన్ని ధ్యానం చెయ్యమంటారు మన ఋషులు.

వేదాల మనన చింతనలద్వారా తమ బుద్ధిని పదునుపెట్టుకున్న మన ఋషులు అద్భుతమైన దర్శన ఉపనిషదాది శాస్త్రా లనేకం రచించారు. వాటిలో వివిధ పదార్థాల వివరణతో బాటు మనస్సునుకూడా ఒక ద్రవ్యంగా -పదార్థంగా గ్రహించి దాని ఉనికిని లక్షణ ప్రమాణాలతో నిరూపించారు. దాని వివిధ గుణాలను, శక్తులను వర్ణించారు. స్థలాభావంతో వాటి నిక్కడ ఉదహరించలేక పోతున్నాము. అభిరుచి గలవారు ప్రముఖ వేద విద్వాంసులు ఆచార్య రాజవీర శాస్త్రిగారి రచన 'వైదిక మనో విజ్ఞాన్' అనే హిందీ పుస్తకం చదువగోరుచున్నాము. (ప్రాప్తిస్థానం : ఆర్ష సాహిత్య ప్రచార ట్రస్టు, 2ఎఫ్, కమలానగర్ ఢిల్లీ-7)

ఆధునిక మనోవైజ్ఞానికులును చాలా పరిశధనలను చేసి అర్థచేతన (సబ్ కాన్షియస్) చేతన (కాన్షియస్) అతి చేతన (సూపర్ కాన్షియస్) మనస్సుల యొక్క శక్తులను కనిపెట్టారు. అద్భుతమైన చికిత్సా పద్ధతులను రూపొందించారు. ఇంతజరిగినా వారు మనస్సు అనేది ఒక పదార్థంగా లేదా సూక్ష్మపదార్థంగా అంగీకరించలేకపోతున్నారు. వారు బుద్ధిపైన కూడా చాలా పరిశోధనలు చేసారు. వారి ఆలోచనలు ఈ విధంగా ఉన్నాయి.

డా॥ స్టర్న్ యొక్క అభిప్రాయం ప్రకారం బుద్ధివలననే మానవుడు పరిస్థితులకను గుణంగా నిర్ణయాలు తీసుకొని జీవనయాత్ర సాగిస్తూన్నాడు.

డా॥ టర్మన్ ఏమంటారంటే - బుద్ధి ఒక విషయంపైన లోతుగా ఆలోచిస్తున్నపుడు ఏ ఆకారమూ స్మృతిపథంలో రాదు. అయినా ఒక చక్కటి ఆలోచన (థాట్) వస్తుంది. కనుక అమూర్తచిఇతన యోగ్యత కలిగిందే బుద్ధి అంటాడు.

డా॥ థార్నడాయిన్ మరియు డా॥ థామ్సేన్ చేసిన పరిశోధనల సారంశమేమంటే - బుద్ధిలో కేవం ఏదో ఒక ప్రకారమైన యోగ్యతమాత్రమే లేదు. అది అనేక యోగ్యత లను కలిగి స్వతంత్ర నిర్ణయాలు తీసుకోగల సత్తాగా సమయస్ఫూర్తితో వ్యవహరిస్తుంది. అది ఒక జ్ఞాన భండారం.

డా॥ వేల్స్ ఏమంటారంటే : "బుద్ధి అంటే సరియైన అర్థమేమంటే మన జీవన వ్యవహారాలను పునః సంఘటితపరచి క్రొత్త పరిస్థితులలో మరింత నిపుణతతో వ్యవహరించేశక్తి" అంటారు.

ప్రొ॥ వుడ్‌వర్థుగారు బుద్ధియొక్క సరియైన స్వరూపం తెలుసుకోవడానికి బుద్ధి మరియు మనీషాలలో ఉండే భేదం తెలుసుకోవా లంటారు. ఈ రెంటిలోనూ చాలా దగ్గర సంబంధాలున్నప్పటికీ కొన్ని భేదాలున్నా యంటారు. 'మనిషా' అంటే - ఆలోచిస్తూ, తెలిసికుంటూ, జ్ఞాపకం పెట్టుకుంటూ క్రొత్త జ్ఞానాన్ని కలిగించే ఒక శక్తి. అంటే మనీషా మనకు జ్ఞాన ప్రాప్తి కలిగిస్తున్నది. అయినప్పటికీ దీనికన్న బుద్ధియే చాలా గొప్పది. అది మనను సమస్యల బంధనాలనుండి బయటపవేయగల శక్తి గలది అంటారు.

డా॥ స్పీయర్ ఏమంటారంటే - బుద్ధిని రెండుగా విభజిస్తే సరిపోతుందంటారు. ఒకటి సామాన్యబుద్ధి రెండు విశిష్టబుద్ధి.

పై విధంగా ఆధునిక మనోవైజ్ఞానికులలో భిన్న భిన్న అభిప్రాయాలున్నాయి. అయినప్పటికీ వీరంతా అది ఒక జ్ఞానాత్మకశక్తి అంటారు. వీరందరికన్న విశిష్టంగా వేదం బుద్ధిని సుయోగ్య సారథి అంటుంది.

సుషారథి రశ్వానివ యన్మనుష్యా
న్నేనీయతే భీషుభి ర్వాజిన ఇవ,
హృత్ప్రతిష్ఠం యదజిరం జవిష్ఠమ్
తన్మే మనః శివసంకల్ప మస్తు ॥

-యజుర్వేదం 34-6

ఏ విధంగానైతే నేర్పరియైన మంచి సారథి కళ్ళెములతో వేగ వంతములైన గుఱ్ఱాలను సరియైన మార్గంలో నడుపుతాడో, ఏది హృదయ ప్రాంతమున ఉంటుందో, అజిరమో - నిత్యయౌవ్వనంతో ఉంటుందో, మిక్కిలి శక్తివంతమో అట్టి నా మనస్సు శివసంకల్ప యుక్త మగును గాక !

ఇచట మనః పదము బుద్ధికి పర్యాయ వాచకంగా ప్రయోగింపబడింది.

పై వేదోపదేశాన్ని ఋషులు మనవంటి సామాన్యుల కర్థమగుటకు ఈ క్రింది విధంగా వివరించి చెప్పారు.

కఠోపనిషత్తులో యమాచార్యు డనే గురువు జిజ్ఞాసువుగా వచ్చిన నచికేతునకు ఈ విధంగా ఉపదేశించాడు -

శ్లో॥ ఆత్మానం రథినం విద్ధి, శరీరం రథమేవ తు ।
బుద్ధిం తు సారథిం విద్ధి, మనః ప్రగ్రహ మేవ చ ॥

శ్లో॥ ఇంద్రియాణి హయా నాహుర్
విషయాం స్తేషు గోచరాన్।
ఆత్మేంద్రియ మనోయుక్తం
భోక్తే త్యాహుర్ మునీషిణః ॥

-కఠోపనిషత్తు. 3-3,4

ఓ శిష్యా ! నచికేతా ! శరీర మనబడే ఈ రథంలో జీవాత్మను రథికునిగా - రథస్వామిగా - రాజుగా తెలిసికో. నిశ్చయాత్మకమగు చిత్తవృత్తిని - బుద్ధిని సారథిగా తెలుసుకో. మనస్సు కళ్ళెమువలె ఉంటుంది.

మనీషులైన విద్వాంసులు ఇంద్రియాలే కళ్ళెమునకు కట్టబడిన గుఱ్ఱములుగా ఉంటాయంటారు. ఇంద్రియాలు గుఱ్ఱాలయి నపుడు రూపరసాది విషయాలే మార్గములు. ఈ విధంగా శరీర యింద్రియ మనస్సులతో కూడిన జీవుడు సుఖదుఃఖాల ననుభవిస్తూ భోక్తగా ఉంటాడు. పైవివరణను బట్టి బుద్ధి మన జీవన సారథి. దానిని మంచిగా శక్తివంతంగా యోగ్యత కలిగినదిగా చేసుకోగలిగితే మన జీవితం చక్కగా సాగిపోతుంది. నిత్య జీవితంలోనూ ఈ బుద్ధియొక్క అవసరమెంతో ఉంది. అనేక మోసాలతో కూడిన ఈ ప్రపంచంలో బ్రతుకు బండి సరిగా నడవాలంటే యిది అనివార్యమే. కల్తీలనుండి అసలునూ, చెడునుండి మంచినీ, అసత్యాన్నుండి సత్యాన్నీ వేరుచేయాలంటే బుద్ధి అవసరమే. ఇది చురుకుగా పనిచేయకపోతే ఎన్నో సమస్య లుత్పన్నమౌతాయి. అనేక సందేహాలు ఉక్కిరిబిక్కిరి చేస్తాయి. సత్యమేమిటో, కర్తవ్యమేమిటో అర్థం కాదు. అప్పుడే బుద్ధియొక్క ప్రకాశం మనకవసరం.

బుద్ధి మూడు రకాలుగా ఉంటుంది. అవి 'సమాన్య బుద్ధి, సుబుద్ధి, కుబుద్ధి'. వీటిలో మనం సుబుద్ధినే కోరుకోవాలి. అదే మనచేత కొన్ని మంచి పనులను చేయించి పుణ్యాత్ములను చేస్తుంది. సామాన్య బుద్ధివల్ల మనకు విశేష ప్రయోజన మేమీ ఉండదు. జీవితం యిబ్బందిలేకుండా జరుగుతుందంతే. కుబుద్ధివల్ల మనకు కీడే కలుగుతుందికాని మేలెంతమాత్రం కలుగదు. ఇది రజోగుణ తమోగుణయుక్తంగా ఉంటుంది. బుద్ధిలో ఈ పరిణామాలు కలగటానికి కారణం మనం పూర్వజన్మలలోను, ఈ జన్మలోను చేసిన కర్మలు, గడపిన జీవితం. ఇప్పటికైనా మనం జాగ్రత్తపడి శ్రీకృష్ణ భగవానుడు గీతలో వివరించిన త్రివిధ బుద్ధులను గురించి చదివి, అర్థంచేసుకొని సాత్త్విక బుద్ధికొరకు యత్నించాలి. కృష్ణ భగవానుడు చెప్పిన వివరణ ఏమంటే -

ప్రవృత్తించ నివృత్తించ కార్యాకార్యే భయాభయే ।
బంధం మోక్షం చ యా వేత్తి బుద్ధిః సా పార్థ ! సాత్త్వికీ ॥

ఏది ప్రవృత్తి మార్గమో ఏది నివృత్తి మార్గమో, ఏ కార్యాలు చేయతగినవో ఏవి చేయకూడనివో, ఏది భయరహితమో ఏది భయకారకమో, ఏది మనను సంసారంలో బంధిస్తున్నదో ఏది మనను బంధనాలనుండి విడిపించి ముక్తిని కలిగిస్తున్నదో చక్కగా తెలునుకోగల బుద్ధిని సాత్త్వికబుద్ధి అంటారు.

ఆ విధంగా తెలుసుకొని - చేయకూడని కర్మలను, భయకారకమైన కర్మలను పూర్తిగా విడచిపెట్టి, తనకు ఉన్నతిని కలిగించే పరోప

కారాది పుణ్యకార్యాలు చేయాలి. సంసారంపై రాగాన్ని పోగొట్టుకుని ముక్తిని ప్రాప్తియే లక్ష్యంగా జీవించాలి. అట్టి లక్ష్యంవైపు మనను తీసుకువెళ్ళే సారథినే సాత్విక బుద్ధి అంటారు.

యయా ధర్మ మధర్మం చ కార్యం చాకార్యమేవ చ।
అయథావత్ ప్రజానాతి బుద్ధిః సా పార్థ ! రాజసీ॥

ఓ అర్జునా ! ఏ బుద్ధి ధర్మాధర్మాలను కార్యాకార్యాలను యథావత్‌గా ఉన్నది ఉన్నట్లుగా తెలిసికోలేకపోతుందో అట్టి బుద్ధిని రాజసబుద్ధి అఙటారు.

ఇట్టివారికి ఆలోచన తక్కువగాను ఆవేశం (తొందరపాటు) ఎక్కువగాను ఉంటుంది. వారు అట్టి రజోగుణాన్ని తగ్గించుకోవడానికి ఆహార విహార వ్యవహారాలలో సాత్వికతను పాటించాలి. ప్రశాంతంగా ఆలోచించే ప్రయత్నం చెయ్యాలి.

అధర్మం ధర్మమితి యా మన్యతే తమసావృతా ।
సర్వార్థాన్ విపరీతాం శ్చ బుద్ధిః సా పార్థ ! తామసీ ॥
(భగ. 18-30, 31, 32)

ఓ పార్థ ! తమోగుణంతో ఆవరింపబడిన బుద్ధి అధర్మాన్ని ధర్మంగా భావిస్తుంది. సమస్త విషయాలను విపరీతంగానే అర్థం చేసు కొంటుంది.

ఈ తామసబుద్ధి చాలా ప్రమాదకరమైనది. ఇది మనను నీచయోనులలోనికి తీసుకుపోతుంది. అంటే క్రిమి కీటకాది నిమ్న జన్మలను కలిగిస్తుంది. దీనిని పోగొట్టు కోవడానికి విశేష ప్రయత్నం చెయ్యవలసి ఉంటుంది. సద్గ్రంథపఠనం, సత్సాంగత్య వీరికి సహకరిస్తాయి. అహింసా సత్యాది వ్రతాలను నిష్ఠగా ఆచరించాలి. తపస్సు చేయాలి. అంటే గీతలో చెప్పినట్లు శరీరక వాచక మానసిక తపస్సులు చెయ్యాలిట.

పై వివరణను అర్థం చేసుకున్న వివేకవంతుడు తన బుద్ధియొక్క స్థితిని అర్థంచేసుకొని దానిని సరిచేసుకొన యత్నిస్తాడు. 'బుద్ధి నాశాత్ ప్రణశ్యతి' అనే హెచ్చరికను గుర్తించి జాగ్రత్తపడతాడు.

కనుకనే, ఆర్య చాణక్యుడు ఈ విధంగా ప్రార్థిస్తాడు - "హే వరమేశ్వరా ! నా పావ కృత్యాలవల్ల నా సర్వస్వం నశించినా సరే ! ధనధాన్యాలు గృహారామాలు వరివారం నాశనమైపోయినా, నా శరీరావయవాలు శిథిలములై పోయినా నేను పెద్దగా చింతింపను. కేవలం ఒకే ఒక వేస్తువు బుద్ధిని మాత్రం నావద్ద ఉండనియ్యి. దానిని నానుండి దూరం చెయ్య"వద్దని ప్రార్థిస్తాడు.

మహాభారత ఉద్యోగపర్వంలో బుద్ధియొక్క విశిష్టతను తెలపటానికి ఒక ప్రసంగం కల్పింపబడింది. 'దేవత లెవరినైనా రక్షించాలన్నా నాశనం చెయ్యాలన్నా వారేమి చేస్తారు ?" అనేది ప్రశ్న. దానికి శస్త్రాలనుగాని విషాన్నిగాని ప్రయోగింపరు. కేవలం వాని బుద్ధినిమాత్రం భ్రష్టం చేస్తారు. దానితో అతడు తనకు తానే వక్రమార్గంలోపడి నశిస్తాడు. అట్లే, వారు ఎవరినైనా రక్షించాలనుకుంటే తమ సైన్యాన్నో, అంగరక్షకులనో, దూతలనో పంపరు. కేవలం అతని బుద్ధిని సన్మార్గంలో నడువ ప్రేరేపిస్తారు. దానితో అతడు స్వయం గానే రక్షింపబడతాడు' అని చెప్పబడింది. దీని భావమేమంటే - ఒకడికి తన పావకర్మలఫల మనుభవింవ నమయ మాసన్నమైనపుడు అతని బుద్ధి వక్రిస్తుంది. దానితో విపరీత కార్యాలు చేసి కష్టాలపాలౌతాడు. అందుచేతనే 'వినాశకాలే విపరీత బుద్ధి' యనే సామెత ఏర్పడింది.

బుద్ధి నశించటంవల్లనే దీర్ఘవ్యాధులు కలుగుతాయంటాడు ప్రసిద్ధ ఆయుర్వేదా చార్యుడు పునర్వసు మహర్షి. 'ప్రజ్ఞావరాధో మూలం సర్వరోగాణాం' - సర్వరోగాలకు మూలం బుద్ధి నశించటమే. బుద్ధి నశించటంతో రాజసిక తామసిక సంస్కారాలు రాజ్యం చేస్తాయి. దానితో అతడు మద్య మాంస వ్యభిచారాదులకు లోనై రోగాల పాలౌతాడు. కనుక మనం ఆరోగ్యంగా ఉండాలన్నా, ఆనందంగా ఉండాలన్నా సద్బుద్ధికొరకు ప్రార్థించటమే ఉత్తమం. అందుకు గాయత్రీ మంత్రమే ఉత్తమోత్తమ మంత్రం. ఇంతేగాక, వైజ్ఞానిక పురోగతికీ, శాస్త్ర కళారంగాల అభివృద్ధికీ, సమాజిక జీవన వికాసానికీ కొంత విశేష బుద్ధి అవసరం. కనుక, మనం సదా సద్బుద్ధితోబాటు బుద్ధివికాసం కొరకు ప్రార్థిస్తూ అందుకు తగిన ప్రయత్నం, పరిశ్రమ చెయ్యాలి.

మన ఆయుర్వేద గ్రంథాలలోను, ధర్మ గ్రంథాలలోను సత్త్వగుణాన్ని, బౌద్ధిక శక్తిని పెంచే ఆహారవిహారాలు తెలుపబడ్డాయి. వాటిని సేవిస్తే తప్పక సుబుద్ధి బలపడుతుంది. ముఖ్యంగా ఆవుపాలు, అంజీర ద్రాక్ష ఉసిరిటక మొదలైన పండ్లు, తులసి సరస్వతి శంకపుష్పి మొ. కూరలు మేలు చేస్తాయి. రాజస తామసాహారాలు పూర్తిగా విసర్జించి సాత్వికా హారాలు తీసుకుంటే మంచిది. మద్యమాంసా లను ఏరూపంలోనూ తీసుకో కూడదు. కేవలం మద్యమేకాక బుద్ధిని నశింపజేసే గంజాయి, భంగు, బీరు, ఆధునిక డ్రగ్సు కూడా నిషిద్ధమే. 'బుద్ధింలుంవతి యద్ద్రవ్యం మదకారీ తద్ ఉచ్యతే' అని చెప్పినట్లు అవన్నీ మద్యం వంటివే. బుద్ధిని నశింపచేసేవే.

ప్రతీ తల్లీ, ప్రతీ తండ్రీ తమ టడ్డలు మేధావులు కావాలని కోరుకుంటారు. అందుకు తమ శక్తికొలది ప్రయత్నిస్తారు. అయితే, ఆ ప్రయత్నం తమ పిల్లలు విద్యార్థి దశలో ఉన్నప్పుడు కన్న అంతకు పూర్వమే వారు తల్లి గర్భంలో ఉన్నప్పుడే ప్రారంభిస్తే మంచి ఫలితాలుంటాయని మన ఋషులంటారు. అందుకొరకే గర్భిణీ స్త్రీలకు పుంసవన, సీమంతోన్నయన సంస్కారాలు జరిపించాలంటారు. ఆ సంస్కారాల విధి విధానాల ననుసరిస్తే తప్పక మంచి ఫలితాలుంటాయి. ఆహార విహార వ్యవహారాలలో కొన్ని జాగ్రత్తలు పాటిస్తే గర్భిణులు తమ గర్భంలో పెరిగే బిడ్డల మేదస్సును వికసింపజేయవచ్చు. వాటిని గురించి వివరంగా తెలుసుకో గోరువారు మాచే ప్రచురింపబడిన గ్రంథం "దౌహృదిని" (ఋషుల దృష్టిలో గర్భిణీ స్త్రీ) చదువగోరు చున్నాము.

'ధియః' - సారాంశం

సర్వాతర్యామివైన ఓ వరమేశ్వరా ! నీవు సర్వజ్ఞుడవు. వరిపూర్ణ జ్ఞానివి, నిన్నుపాసించి యేమును జ్ఞానవంతుల మగుదుము గాక ! ఆ జ్ఞానముతో అభ్యుదయ నిఃశ్రేయసముల నొందుదుముగాక !

आर्य समाज हमें जान से प्यारा

तर्ज झिलमिल सितारों का आँगन होगा

आर्यसमाज हमें जान से प्यारा,
कृण्वन्तो आर्यम् इसका नारा ।
रक्षक है सबका,सबका सहारा य
इसको समर्पित जीवन हमारा।

ये सुधार आंदोलन जिसने पाखंडो को चूर किया,
काट काटके पाप की जड़ को, अत्याचार को दूर कियाय
सत्य धर्म का राखनहारा ।।१।।

सच्चे इक ईश्वर की पूजा जो करने को कहता है,
उसको ही मानो जो हर दिल में हर पल रहता है य
चारो तरफ जिसका चमकारा ।।२।।

आर्यसमाज के कारण हिंदी आज राष्ट्र की भाषा है,
एक धर्म व एक संस्कृति की जगती पल पल आशा हैय
भारत के बिंदी का एक सितारा ।।३।।

जातिवाद और छुआछूत का जिसने भेद मिटाया था,
सब दलितों को लगा गले, उनका अधिकार दिलाया थाय
कर्म व्यवस्था से जग को उबारा ।।४।।

इसके प्रबल विचारों ने दुनियां की नींद उड़ाई थी,
क्रांति कारियों में घुसकर के भारत माँ मुक्त कराई थी।
स्वराज्य मंत्र बस इसने पुकारा ।।५।।

आर्यसमाज ही सिखलाता,सर्वोत्तम साधन शिक्षा है।
सफल जिंदगी जीने हेतु देता योग की दीक्षा है।
इससे ही फैला सुख उजियारा ।।६।।

वैदिक शिक्षा पर ही चलते, इसके सब अनुयायी है,
श्रेष्ठता पवित्रता ही जिनके मन को भायी है य वेद ही जिनका ज्ञान अधारा ।।७।।

परोपकार ही हम सबके जीवन का इक उद्देश्य रहे,
स्वस्थ निरोगी जन जन हो कही न कोई क्लेश रहे।
कहता जगत परिवार हमारा ।।८।।

रचना : आर्यहितेंद्र

నివాసము వ్యవహారముల సబంధమైన నియమములు

-చిన్నయ్య వానప్రస్థి

5) తడిన కాళ్లతో భుజించవలయును. కాని శయనించ రాదు. వెండ్రుకలు, భస్మం, ఎముకలు, మన్నుపాత్రల ముక్కలు పత్తిగింజలు, పొట్టు మొదలగు వస్తువలపై కెక్కరాదు.

6) రెండు చేతులతో ఒకేసారి తలను గోకరాదు.

7) పరస్త్రీని సేవించరాదు.

8) క్షత్రీయుడు, వేదపాఠ మొనర్చువాడు సర్వము దుర్బలులైనను అవమానించరాదు.

9) వ్యక్తి తాను భాగ్యహీనుడనని తమను తాము అవమాన పరుచుకోరాదు.

10) రాత్రి మిగిలి యుండగనే దినం ప్రారంభంలోనే మల విసర్జనం, దేవపూజ, వస్త్రధారణం, అలంకరణము మొదలైనవి పూర్తి చేసికోవలయును.

11) అంతరాత్మ సంతృప్తి చెందుచున్నట్టి కార్యములనే చేయుచుండుము. మనస్సునకు విపరీతమైనవి వీడుడు.

12) ఋత్విజుడు, పురోహితుడు, ఆచార్యుడు, మామ, అతిథి, సేవకుడు, బాలుడు, వృద్ధుడు, రోగి, జ్ఞాని, కుటుంబికుడు, తల్లి, స్త్రీ కన్యలతో వివాదము కూడదు.

13) ఎప్పటికైనను ఒట్టు తినవద్దు.

14) తలకు ముఖమునకు కాని వచ్చెటట్లు నూనె పూయరాదు.

15) పాత్రలను, అన్నమును కాళ్లతో జరుప రాదు.

16) పాత్రలను ఎత్తిదించెటప్పుడు, తలుపులు కిటికీలు మూసె తెరిచెటప్పుడు, తాకుచు చప్పుడుకానట్లు చూచుచుండుము.

17) నోటినో బట్ట, పుల్ల, కాగితము మొదలైనవి పెట్టరాదు.

18) మలమూత్రముల విసర్జన సమయాలలో తప్ప గుప్తాంగములను స్పర్శించుట హాని కరము మరియు అసభ్యత.

19) గుప్తాంగములను సదాగుప్తముగానే యుంచుము. ఈ విషయమై స్నాన సమయాన నిలిచే కూర్చొనే వేళల ప్రత్యేకముగా శ్రద్ధ వహించుచుండుము.

20) తమ వ్యక్తిగత చింతలను, దుఃఖాదులను అకారణముగా పరుల ముందుంచరాదు. ఇది హాస్యాస్పదమగు చర్య

21) దుస్తులు ధరించే విధానంలో దేశకాల పరిస్థితులను గమనించుము. దేశములో స్వదేశీయుల యట్టి వస్త్రధారణయే శ్రేష్ఠము.

22) గుడ్డలను స్వచ్ఛముగా జీర్ణమై లేనట్లు చూచుకొనుము.

23) బాలురు బాలుర సంఘములో, బాలికలు బాలికల సంఘములలో నుండుటే మంచిది.

24) సార్వజనిక స్థానాదుల యందు, దారుల మధ్య, మెడలపై పరస్పరముగా చేతులు వేసికొని నిలుచుట నడచుట అసభ్యకరమైన నడకలు.

25) నడుములు పట్టుకొని నడచుట బలహీనతలకు గుర్తు. చేతులూపుచు ఠీవిగా నడువవలెను.

స్త్రీల సంబంధమగు శిష్టాచారములు

1) పురుషులతో అవసరంలేని ప్రసంగములు స్త్రీలకు కూడవు. అవసరం గల్గినను దృష్టిని క్రిందికి నిలిపుచు వారికి స్త్రీలు తెలియ పరుచవలెను. అనవసరమైనవి తెలుపరాదు. ఏకాంతములో సోదరునితో మిత్రునితో కూడ మాట్లాడుచుండుట నీతికి విరుద్ధము. కోడలిని, వదినను, తన స్త్రీని, ఏ యువతి నైనను తదేక దృష్టితో చూచుట, స్పర్శించుట మొదలైనవి తగని చేష్టలు.

2) గొంతెత్తి పెద్దగా స్త్రీలు మాట్లాడరాదు. వినరానట్లుగా కూడ మాట్లాడరాదు.

3) తమ గృహద్వారంలో నిలచియో కూర్చో నియో, పరాయి గృహమందలి, స్త్రీలతో మాట్లాడుచుండుట తప్పు. దారి ప్రక్కనగల గృహద్వారంలో కూర్చొని లేక నిలిచియు ఉ ండరాదు.

4) భర్త కంటె ముందు భార్య తినరాదు. పతి లేనిచో పుత్రునికైనను లేదా సంపాదించు వారికైనను భుజింపజేసి లేక జేయుచు తాను తినవలయును.

5) గడువ చెంప కణత మొదలగు చోట్లు, చేతులు కాళ్లపై, పొడుచుకొన్నట్లు చేయు చుండుటలు అసభ్యములుగా నెంచబడును.

6) చాల నగలు ధరించుట, విలువైన వస్త్రములను ధరించుట అనాగరతకు గుర్తులు.

7) దంతములపై వెండి బంగారము చుట్లు మొలలు వేయించుట (రంధ్రములు చేసి) బుద్ధి హీనతకు గుర్తులు.

8) శరీరము అందమును తెలుపుటకై, ధరించిన సొమ్ములను చూయించుటకై సన్నని అంగ వస్త్రమును ధరించుటలు వారి దిగజారిన తనమును సూచించును.

9) రేయింబవళ్లు అద్దములో ముఖమును చూచుచుండుట ఆకు నమలుట, మొదలైనవి స్త్రీలకు అలంకారములు కావు.

10) కడుపునైనను, స్తనములనైనను ముందు కుంచు చుండె ప్రయత్నములు స్త్రీలకై సిగ్గులేని చేష్టలుగా పరిగణించ బడును.

11) పరపురుష సేవనమును భారతీయ స్త్రీలు గొప్ప పాతకముగా పరిగణించుచుందురు.

12) స్పష్టమగు దుర్భాషలతో కూడిన గేయములు స్త్రీలకు (పురుషులకు) తగవు.

13) మరిది బావ మరియు వారి తుల్యమగు బంధువులతో సభ్య స్త్రీలు మరిచి పోయి కూడ పరిహసించుకొనరాదు.

14) గృహ కార్యములు ముగిసిన తదుపరి స్త్రీలు చదువుట చదివించుటలకై తమ సమయములను వినియోగ పరుచ వలయును. తమ చిన్న పిల్లలకు వీధియందు గల బాల బాలికలకు పొరుగునగల స్త్రీలకు సదుపదేశ మొనర్చు చుండవలయును.

15) తల వెండ్రుకలలో నేయి పోసి చాల రోజుల వరకు జడలుగా నుంచుట, అంటు తోనంటించి వాటిని శుభ్రపరిచే శ్రమ నుండి దినముల వరకు తప్పుకొనుటలు, వారి అజ్ఞానములకు గుర్తులు.

ఇందులోనే తెలివి తేటలు గలవు

1) గృహమందలి వస్తువుల నన్నింటిని నియమిత చోటుల యందే నుంచుము. అవసరమున వెతకడ ముండదు.

2) చాకలికి వస్త్రములు వేసెటప్పుడు వాటిని చక్కగ పరిశీలించుము. వాటి జేబులలో ఏవేని వస్తువులుండి పోవచ్చును.

3) కుర్చి మంచము బల్లలను నేల నుండి జరుపవలసినచో, ఇంచుక పైకెత్తి తీసు కెళు ్లము. ఈడ్చుచు తీసుకెళ్లవద్దు.

4) అల్మారా నుండి వస్తువులను తీసిన తదుపరి తెరిచియే ఉంచవలదు. మూసి వేయుము.

5) వస్తువులను (అనవసరమైనవి) కిటికీల నుండి వెలుపలికి పారవేయరాదు. క్రిందికి వెలుపలికి వాటిని చూచి పారవేయుము. జనులకు జంతువులకు అపాయము జరగనట్లు గమనించుము.

6) రైలు, ట్రామ్ మొదలగు వాహనములపై ఎక్కుట దిగుటలయందు, అవి నిలిచిన తదుపరియే ప్రయత్నించవలయును. నిలువక ముందుగాని, నడువగగాని కూడదు.

7) రైలు ప్రయాణమునకు, సమయానికి పూర్వమే చేరుము.

8) సావధానముగా నావపైకెక్క వలయును. వడ్డును వదిలిన నావపై కెక్కరాదు.

9) మసి బుడ్డి, సీసా, పాలు, నెయ్యి పాత్రలను నడిచే చోట పెట్టరాదు. అల్మారాలలో అరలలో దాచెటప్పుడు వాటిని లోపలికి తగినంతగా దాచవలయును.

10) గ్లాస్ చేత నీళ్ల గాని పాలుగాని అందించెటప్పుడు పాత్రకు నిండుగా ఒలికి పోవునట్లు నింపరాదు.

11) పని ముగిసిన తదుపరి చాకును మూసి పెట్టుము.

12) దారి నాపుచు యితరులకు అంతరాయము గల్గునట్లు మాటలు పెట్టరాదు.

13) రాజమార్గములు దాటునప్పుడు యిరుకైన చోటుననే దాటవలయును.

14) నూతన చోట నీటిలో దిగుటకు ముందు కఱ్ఱ సహాయముతో లోతును తెలిసికొమ్ము.

15) వాహనంలో పిల్లల వెంబడి పోవలసి యున్నచో వారిని మధ్యలో నుంచుము.

16) గడియారములకు సరైన సమయాన కుంజీ లివ్వవలయును.

17) బదులుగా తెచ్చిన వస్తువులను తిరిగి యివ్వడంలో ఆలస్యం చేయరాదు.

18) కాలుచున్న అగ్గిపుల్లను బొగ్గను ఆర్పి వేసియే పారవేయుము.

19) ఉత్తరములు లేఖలు వ్రాసిన తదుపరి ఒకసారి చదువుము.

20) వెళ్లుచున్న వైపునకు సరిగా చూచు చుండుము.

21) కలముతో అధికముగ మసిని తీసికో రాదు.

22) కుర్చి, బల్లాలను గోడలకమర్చి యుంచ రాదు.

23) సాధన లేని, ఆకలి గొనిన, కొమ్ము లిరిగిన, కన్నుపగిలిన, గిట్టలిరిగిన, తోకలు కోయబడిన గుఱ్ఱము లేక ఎద్దు బండిలో ప్రయాణము చేయరాదు.

24) ధరించుటకు పూర్వము వస్త్రములను దులుపుము.

25) అతి ప్రాతఃకాలము, చీకటి సంధ్య వేళలో, మిట్ట మధ్యాహ్నము అజ్ఞాత వ్యక్తితో కలిసి ఎచ్చటికిని వెళ్లరాదు.

26) మృత్యువు పర్యంతము తమ శారీరిక మానసిక, అధిదైవిక మరియు ఆత్మికోన్న తులకై ప్రయత్నం సతతము సలుపు చుండుము.

आर्य समाज मदनूर के वार्षिकोत्सव के चित्र

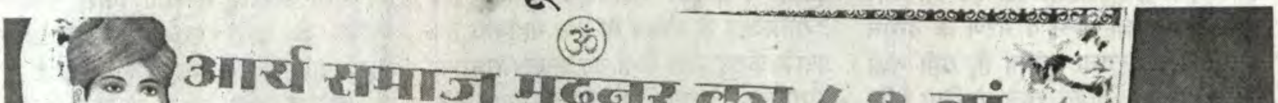

'गाय सर्वोत्तम उपकारी पशु ही नहीं अपितु मनुष्यों की पूजनीय देवता है'

–मनमोहन कुमार आर्य

परमात्मा ने इस सृष्टि को जीवात्माओं को कर्म करने व सुखों के भोग के लिए बनाया है। जीवात्मा का लक्ष्य अपवर्ग होता है। अपवर्ग मोक्ष वा मुक्ति को कहते हैं। दुःखों की पूर्ण निवृत्ति ही मोक्ष कहलाती है। यह मोक्ष मनुष्य योनि में जीवात्मा द्वारा वेदाध्ययन द्वारा ज्ञान प्राप्त कर एवं उसके अनुरूप आचरण करने से प्राप्त होता है। सांख्य दर्शन में महर्षि कपिल ने मोक्ष का सूक्ष्मता से विवेचन किया है जिससे यह ज्ञात होता है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य वेद विहित सद्कर्मों अर्थात् ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र यज्ञ एवं परोपकार आदि को करके जन्म व मरण के बन्धन वा दुःखों से छूटना छूटना है, यही मोक्ष है। मनुष्य को जीवित रहने के लिए भूमि, अन्न व जल सहित गोदुग्ध व फलों आदि मुख्य पदार्थों की आवश्यकता होती है। गोदुग्ध हमें गाय से मिलता है। दूध व घृत आदि वैसे तो अनेक पशु से प्राप्त होते है परन्तु गाय के दूध के गुणों की तुलना अन्य किसी भी पशु से नहीं की जा सकती। गाय का दुग्ध मनुष्य के स्वास्थ्य, बल, बुद्धि, दीर्घायु आदि के लिए सर्वोत्तम साधन व आहार है। मनुष्य का शिशु अपने जीवन के आरम्भ में अपनी माता के दुग्ध पर निर्भर रहता है। माता के बाद उसका आहार यदि अन्य कहीं से मिलता है तो वह गाय का दुग्ध ही होता है। गाय का दूध भी लगभग मां के दूध के समान गुणकारी व हितकर होता। भारत के ऋषि मुनि योगी व विद्वान गोपालन करते थे और गाय का दूध, दधि, छाछ व घृत आदि का सेवन करते थे। गोदुग्ध से घृत भी बनाते थे और उससे अग्निहोत्र यज्ञ कर वायु व जल आदि की शुद्धि करते थे। इन सब कार्यों से वह स्वस्थ, सुखी व दीर्घायु होते थे। ईश्वर प्रदत्त वेद के सूक्ष्म व सर्वोपयोगी ज्ञान को प्राप्त होकर सृष्टि के सभी रहस्यों यहां तक की ईश्वर का साक्षात्कार करने में भी सफल होते थे और मृत्यु होने पर मोक्ष या श्रेष्ठ योनि में जन्म लेकर सुखों से पूर्ण जीवन प्राप्त करते थे।

गाय से हमें केवल दूध ही नहीं मिलता अपितु गाय माता के समान नाना प्रकार से हमारी सेवा करती है और साथ ही कुछ महीनों व वर्षों के अन्तराल पर हमें पुनः बछड़ी व बछड़े देकर प्रसन्न व सन्तुष्ट करती है। बछड़ी कुछ वर्ष में ही गाय बन जाती है और हम उसके भी दुग्ध, गोबर, गोमूत्र, गोचर्म (मरने के बाद) को प्राप्त कर अपने जीवन मे सुख प्राप्त करते हैं। गोबर न केवल ईधन है जिससे विद्युत उत्पादन, गुणकारी खाद, घर की लिपाई आदि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी प्रकार से गोमूत्र भी एक महौषधि है। इससे कैंसर जैसे रोगों का सफल उपचार होता है। नेत्र ज्योति को बनाये रखने नेत्र रोगों को दूर करने में भी यह रामबाण के समान औषध है। त्वचा के रोगों में भी गोमूत्र से लाभ होता है। आजकल पंतजलि आयुर्वेद द्वारा गोमूत्र को सस्ते मूल्य आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध कराया जा रहा है जिसे लाखों लोग अमृत के समान कर प्रतिदिन सेवन करते हैं। गोमूत्र किटाणु नाशक होता है। इससे उदरस्थ कीड़े भी समाप्त हो जाते हैं। ऐसे और भी अनेक लाभ गोमूत्र से होते हैं। गाय के मर जाने पर उसका चर्म भी हमारे पैरों आदि की रक्षा करता है। गोचर्म के भी अनेक उपयोग हैं अतः हम जो जो लाभ गो माता से लेते जाते हैं उस उससे हम गोमाता के ऋणी होते जाते हैं। हमारा भी कर्तव्य होता है कि हम भी गोमाता को उससे हमें मिलने वाले लाभों का प्रत्युपकार करें, उसका ऋण उतारें, उसको अच्छा चारा दें, उसकी खूब सेवा करें और उसके दुग्ध व गोमूत्र का पान करें जिससे हम स्वस्थ व दीर्घायु होकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सकें।

गाय से हमें सबसे अधिक लाभ गोदुग्धा से ही होता है। जो मनुष्य गोदुग्ध का सेवन अधिक करता है उसको अधिक अन्न की आवश्यकता नहीं होती। इससे अन्न की बचत होती है और देश के करोड़ो भूखे व निर्धन लोगों को अपनी भूख की निवृत्ति में सहायता मिल सकती है। यह रहस्य की बात है कि देश में जितनी अधिक गौवे होंगी देश में गोदुग्ध, गोघृत व अन्न उतना ही अधिक सस्ता होगा जिससने निर्धन व देश के भूखे रहने वाले लोगों को लाभ होगा। अनुमान से ज्ञात होता है कि देश की लगभग 40 प्रतिशत से अधिक जनता निर्धन एवं अन्न संकट से ग्रसित है। हमने भी अपने जीवन में निर्धनता और परिवारों में अन्न संकट देखा है। ऐसी स्थिति में यदि किसी निर्धन व्यक्ति के पास एक गाय है और आस–पास से उसे चारा मिल जाता है तो वह परिवार अन्न संकट से उसे गम्भीर रोगों व मृत्यु का ग्रास बनने से बचाया जा सकता है।

ऋषि दयानन्द ने गाय के दूध और अन्न के उत्पादन से संबंधित गणित के अनुसार गणना कर बताया है कि एक गाय के जन्म भर के दूघ मात्र से 25,740 पच्चीस हजार सात सौ चालीस लोगों का एक समय का भोजन होता है अर्थात् इतनी संख्या में लोगों की भूख से तृप्ति होती है। स्वामी जी ने एक गाय की एक पीढ़ी अर्थात् उसके जीवन भर के कुल बछड़ी व बछड़ों से दूघ मात्र से एक बार के भोजन से कितने लोग तृप्त हो सकते हैं, इसकी गणना कर बताया है कि 1,54,440 लोग तृप्त व सन्तुष्ट होते हैं। वह बताते हैं कि एक गाय से जन्म में औसत 6 बछड़े होते हैं। उनके द्वारा खेतों की जुताई से लगभग 4800 मन अन्न उत्पन्न होता है। इससे कुल 2,56,000 हजार मनुष्य का भोजन से निर्वाह एक समय में हो सकता है। यदि एक गाय की एक पीढ़ी से कुल दूघ व अन्न से तृप्त होने वाले मनुष्यों को मिला कर देखें तो कुल 4,10,440 चार लाख दस हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। वह यह भी बताते हैं कि यदि एक गाय से उसके जीवन में

उत्पन्न औसत 6 गायों वा बछड़ियों से उत्पन्न दूध व बछड़ों–बैलों से अन्न की गणना की जाये तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। इसके विपरीत यदि एक गाय को मार कर खाया जाये तो उसके मांस से एक समय में केवल अस्सी मनुष्य ही पेट भर कर सन्तुष्ट हो सकते है। निष्कर्ष में ऋषि दयानन्द जी कहते हैं कि 'देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार कर असंख्य मनुष्यों को हानि करना महापाप क्यों नहीं?' गायों से इतने लाभ मिलने पर भी यदि कोई व्यक्ति व समूह गाय की हत्या करता व करवाता है और मांस खाता है व उसे प्रचारित व समर्थन आदि करता है तो वह मूर्ख ही कहा जा सकता है। गाय सही अर्थों में देवता है जो न केवल हमें अपितु सृष्टि के आरम्भ से हमारे पूर्वजों का पालन करती आ रही है और प्रलय काल तक हमारी सन्तानों का भी पालन करती रहेगी। गाय से होने वाले इन लाभों के कारण निश्चय ही वह एक साधारण नहीं अपितु सबसे महत्वपूर्ण वा प्रमुख देवता है। हम गोमाता को नमन करते हैं। हमें गोमाता पृथिवी माता के समान महत्वपूर्ण अनुभव होती है। वेद ने तो भूमि, गाय और वेद को माता कह कर उसका स्तुतिगान किया है।

गोकरूणानिधि लघु पुस्तक की भूमिका में लिखे ऋषि दयानन्द जी के कुछ शब्द लिख कर हम इस लेख को विराम देते हैं। वह कहते हैं 'सृष्टि में ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो ? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे ? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब विना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना सत्पुरुषों के सामने निन्द्य कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध ा आदि पदार्थों और खेती आदि क्रिया की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।'

१८८३ में तैयार किया जो उनकी मृत्यु के बाद सन् १८८४ में प्रकाशित हुआ । इस ग्रन्थ में देश की गुलामी का विरोध और आजादी का समर्थन करते हुए उन्होंने जो शब्द कहे वह स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य हैं । सत्यार्थप्रकाश आठवें समुल्लास में उन्होंने निम्न शब्द लिखे हैं-ब्रह्मा का पुत्र विराट्, विराट् का पुत्र मनु, मनु का मरीच्यादि दश इनके स्वायम्भुवादि सात राजा और उनके सन्तान इक्ष्वाकु आदि राजा जो आर्यावर्त के प्रथम राजा हुए जिन्होंने यह आर्यवर्त बसाया है ।

अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है । जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है । कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र है । दुर्दिन जब आता है तब देशववासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है ।

कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है । अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है । परन्तु भिन्न भिन्न भाषा, पृथक्-पृथक् शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है । विना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना (देश स्वतन्त्र होना और सर्वत्र वेद का प्रचार होना) कठिन है । इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था वा इतिहास लिखे हैं उसी का मान्य करना भद्रपुरुषों का काम है ।

देश को आजाद कराने की प्रेरणा करने वाले यह विचार ऋषि दयानन्द ने सन् १८८३ में दिये थे । उस समय देश में आजादी की कहीं चर्चा कोई नहीं करता था । रूस व चीन में क्रान्ति नहीं हुई थी । कांग्रेस की स्थापना भी सन् १८८५ में इसके बाद हुई । ऋषि दयानन्द ने देश को आजाद कराने की प्रेरणा न केवल सत्यार्थप्रकाश में ही की है अपितु अपने अन्य ग्रन्थ आर्याभिविनय, संस्कृतवाक्यप्रबोध सहित वेदभाष्य में वेदमन्त्रों की व्याख्या करते हुए भी की है । इससे ऋषि दयानन्द देश को आजादी का मन्त्र व विचार देने वाले पहले महापुरुष थे । देश ने उनको उनका उचित स्थान न देकर उनसे न्याय नहीं किया है । यह भी बता दें की क्रान्तिकारी विचारों के शीर्ष महापुरुष पं. श्यामजीकृष्ण वर्मा उन्हीं के साक्षात् शिष्य थे । गांधी जी के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले महादेव रानाडे के शिष्य थे और रानाडे जी महर्षि दयानन्द जी के सहयोगी व शिष्य थे । आर्यसमाज के सभी अनुयायी भी देश को आजाद कराने की तीव्र भावना रखते थे । स्वामी जी के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल सहित देश के अनेक विचारक स्वामी दयानन्द जी के विचारों से प्रभावित थे । इस आधार पर हम कह सकते हैं कि देश को आजादी का विचार व मन्त्र सबसे पहले स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ही दिया था। स्वामी जी की मृत्यु एक गुप्त षड्यन्त्र का परिणाम थी । उसमें स्वामी जी के अंग्रेज सरकार विरोधी इस प्रकार के विचारों का भी योगदान था । स्वामी दयानन्द जी ने सन् १८७४ में लिखे सत्यार्थप्रकाश में भी अंग्रेज सरकार द्वारा नमक पर कर लगाने के विरोध में टिप्पणी की थी । अतः देश की आजादी का श्रेय महर्षि दयानन्द को है । राजनीतिक दल सत्य को कितना ही छुपा लें, लेकिन सत्य सत्य ही रहता है और यह तथ्य है कि देश को आजाद करने का सबसे पहले विचार व मन्त्र ऋषि दयानन्द जी ने ही देशवासियों को दिया था। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ।

भूल सुधार

दि. ३ अप्रेल २०१८ के आर्य जीवन पाक्षिक पत्रिका में ''वर्तमान समस्याओं के सन्दर्भ में वेदों की प्रासङ्गिकता'' नामक लेख छपा है जिस के लेखक का नाम गलती से आचार्य अग्निव्रत नैष्ठीक छपा है । वास्तव में उस लेख की लेखिका का नाम डॉ. वसुधा शास्त्री हैदराबाद है । ''गलती के लिए खेद''

Dateof Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-04-2018 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, మంత్రి సభ.

To,

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना के अंतरंग सदस्य श्री जी. मल्लिकार्जुन जी का पॉलिटेक्निक कॉलेज के लेक्चरार पद से सेवा निवृत होने पर दि. २ अप्रैल २०१८ को पंडित नरेन्द्र भवन सभा गृह में सम्मानित किया गया ।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य के बड़े भ्राता पंडित घनश्याम दास जी का आकस्मिक निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामंत्री तथा आ.प्र.-तेलंगाना की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के बड़े भाई पं. घनश्याम दास जी का दिनांक २९ मार्च, १०१८ (गुरुवार) को प्रातः निधन हो गया । पंडित जी आर्य समाज महबूबनगर के वरिष्ठ पुरोहित थे । आपका क्षेत्र के लोगों में बहुत प्रभाव था । विशेष अवसरों पर होने वाले कार्यक्रमों और यज्ञों में आपके प्रवचन और उपदेश श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर देते थे । आपने आर्य समाज महबूबनगर को अपनी विद्वता, कर्मण्यता तथा मनमोहक व्यवहार से क्षेत्र में अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त कराई थी । आप हिन्दी के अनन्य भक्त थे और आपने हिन्दी प्रचार का बड़े ही उत्साह से कार्य किया । हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद की परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थियों के लिए श्रेणियों को चलाकर उन्हें प्रशिक्षित करने का कार्य किया । पुरोहित एवं उपदेशक के रूप में भी आपने बड़ी ही तन्मयता के साथ सेवा की । ऐसे जुझारू, कर्मठ एवं विद्वान व्यक्ति का हम सबके बीच से चला जाना बहुत ही दुःखद है और आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है । ३० मार्च, २०१८ को पंडित जी की पूर्ण वैदिक रीति से अन्तयेष्टि संस्कार सम्पन्न हुआ । शवयात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र, तेलंगाणा के अधिकारी, आर. रामचन्द्रकुमार, अशोककुमार श्रीवास्तव, बस्सिरेड्डी, एवं मल्लिकार्जुन, डॉ. चन्द्रय्या एवं कृष्णभगवान जी आदी सम्मिलित हुऐ। उनकी अन्तयेष्टि संस्कार में क्षेत्र से सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया । अंत्येष्टी के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से दिवंगत के प्रति शोक श्रध्दाजंली अर्पित की गई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पं. घनश्याम दास जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्हें आर्य समाज महबूबनगर का एक सुदृढ़ स्तम्भ बताया । सार्वदेशिक सभा परिवार उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्‌गति प्रदान करें ।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor : Vithal Rao Arya • Email : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विठ्ठलराव आर्य मंत्री सभा ने सभा की ओर से समता आकृति प्रिन्टर्स में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद- 500095, तेलंगाना